भीखा साहब की बानी

और जीवन-चरित्र

(14)

बेल ... बाद

७७]

[मूल्य २]

भीखा साहब की बानी

(जीवन-चरित्र सहित)

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद

Printed at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by Sheel Mohan.

भीखा साहब का जीवन-चरित्र

भीखा साहब जिनका घरऊ नाम भीखानन्द था जाति के ब्राह्मन चौबे थे। जिला आजमगढ़ के खानपुर बोहना नाम के गाँव में उन्होंने जन्म लिया जिसे दो सौ बरस के करीब हुए।

बाल अवस्था ही से उनको परमार्थ और साध संग का इतना उत्साह था कि बारह बरस की उमर में घर बार त्याग कर पूरे गुरू और सच्चे मत की खोज में काशी को गये परे वहाँ कुछ न पाकर लौटे। रास्ते में पता लगा कि गाजीपुर जिले के भुरकुड़ा गाँव में एक शब्द अभ्यासी महात्मा गुलाल साहब दर्शन के योग्य हैं। फिर तो यह वहाँ को दौड़े और उनसे उपदेश लिया। इस हाल को भीखा साहब ने अपने एक शब्द में लिखा है—देखो पहिला शब्द पृष्ठ ११-१२ में।

भीखा साहब अनुमान बारह बरस तक तन मन धन से अपने गुरू गुलाल साहब की रात दिन सेवा और सतसंग करते रहे। इसके पीछे जब गुलाल साहब गुप्त हुए तब इनको उनकी गद्दी मिली और चौबीस पचवीस बरस तक अपने सतसंग और उपदेश से जीवों को चेताते और परमारथ का धन लुटाते रहे। भुरकुड़ा में जब से बारह बरस की अवस्था में यह आये कहीं बाहर नहीं गये और वहीं अनुमान पचास बरस की उमर में शरीर त्याग किया। भुरकुड़ा में इनकी समाधि और इनके गुरू गुलाल साहब और दादा-गुरू बुल्ला साहब की समाधें मौजूद हैं जहाँ बिजय-दशमी पर बड़ा भारी मेला होता है।

भीखा साहब के पंथ में बहुत से लोग हैं और अकेले भुरकुड़ा गाँव और बलिया जिले के बड़ा गाँव में और उनके आसपास उस मति के कई हजार अनुयायी रहते हैं।

हमने इन दोनों स्थानों और दूसरी जगहों और ग्रन्थों से भीखा साहब के जन्मने और गुप्त होने का समय जानना चाहा पर कहीं ठीक ठीक पता न लगा। परन्तु एक हस्त-लिखित पुस्तक भुरकुड़ा में मौजूद है जिसे लोग कहते हैं कि गुलाल साहब ने भीखा साहब की मौजूदगी में लिखा और दोनों का छाप बहुतेरे पदों में मिलने से इस कथन का प्रमान होता है। इस ग्रंथ में लिखा है कि उसका बनाना बिक्रमी सम्बत् १७८८ में आरम्भ हुआ और फागुन सुदी ५ वृहस्पतिवार सम्बत् १७९२ को समाप्त हुआ। इस हिसाब से भीखा साहब के जन्म का साल अनुमान सम्बत् १७७० और गुप्त होने का १८२० ठहरता है।

भीखा साहब की पूरी साध गति थी जैसा कि उस भेद से जो उन्होंने अपनी बानी में दिया है प्रगट होता है। इनके कई एक ग्रंथ हैं जिनमें से एक का नाम राम-जहाज है। यह एक भारी पुस्तक है।

भीखा साहब के सम्बन्ध में बहुत सी लीला और चमत्कार मशहूर हैं जिन सब के लिखने की यहाँ आवश्यकता नहीं है क्योंकि कितनी कथायें लोग महात्माओं के गुप्त होने पर गढ़ लेते हैं जिनसे पूरे महात्मा और भक्तजन की महिमा समझदारों की दृष्टि में रत्ती भर नहीं बढ़ती अलबत्त मामूली आदमी वाह वाह करते हैं। तौ भी दो चार कथा दृष्टांत की तरह यहाँ लिखी जाती हैं।

(१) एक बार कीनाराम औघड़ जिनको सिद्धि शक्ति प्राप्त थी इनसे मिलने गये और पीने को मदिरा माँगी। भीखा साहब ने जवाब दिया कि हमारे यहाँ मदिरा का कहाँ गुजर है इस पर कीनाराम ने ऐसा खेल दिखलाय कि भीखा साहब के स्थान पर जहाँ जहाँ पानी था सब मदिरा हो गया। थोड़ी देर पीछे भीखा साहब ने पानी पीने को

अपने एक सेवक से माँगा उसने डर कर उत्तर दिया कि सब पानी मदिरा हो गया है। भीखा साहब ने कहा लावो वह सब जल है, जब लाया गया तब पानी हो गया।

(२) एक नंगे साधू पहुँचे और खाने को मथुरा का पेड़ा और पीने को तिरबेनी का जल माँगा। भीखा साहब ने कहा कि यह तो नहीं है। तब साधू ने अपनी सिद्धि शक्ति से बहुत सा पैदा कर दिया और सब को बाँटा पर भीखा साहब के लिये न बचा। भीखा साहब ने कहा कि हम को भी दो पर सिद्ध ने लाख सिर मारा पेड़ा और जल उनके लिये न आ सका और उसका अंडकोष बेहद बढ़ गया। तब भीखा साहब के चरनों पर गिरा और वह अंग ठीक हो गया जिस पर भीखा साहब की आज्ञानुसार सिद्ध ने वस्त्र धारन किया।

(३) एक भेष आये। रात को उनके खाने को लाया गया तो कहा कि हम दिन ही को खाना खाते हैं इस पर भीखा साहब ने ऐसी मौज की कि थोड़ी देर को दिन का प्रकाश हो गया।

(४) एक मौनी बाबा सिंह पर सवार हो कर उनसे मिलने आये। उस समय भीखा साहब एक भीत पर बैठे दातन कर रहे थे, जब बाबा जी के इस ठाठ से आने का हाल कहा गया तो बोले कि हमारे पास तो कोई सवारी नहीं है और साधू की अगवानी जरूर है, चल भीत तू ही ले चल। इस पर वह दीवार चली। मौनी जी यह देख कर चरनों पर गिरे।

ऐसी कितनी कथायें कही जाती हैं पर वह सब भीखा साहब सरीखे साधगुरु के लिये महा तुच्छ हैं।

एक बंशावली वृक्ष भीखा साहब के गुरू घराने का छापा जाता है जिसे बड़ागाँव जिला बलिया के महंत ने हमें कृपा करके दिया था। उससे जान पड़ता है कि जगजीवन साहब जिनकी अति कोमल और दीनतामय बानी हम छाप चुके हैं भीखा साहब के गुरू के गुरुभाई थे और पलटू साहब (जिनकी बानी भी छप चुकी है) के भीखा साहब दादा-गुरू थे। वह बंशावली प्रमाणिक है जिसको तसदीक भुरकुड़ा से भी कर ली गई है—

॥ सूचीपत्र ॥

—:o:—

भीखा साहब की शब्दावली

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

मन तू राम से लौ लाव ।
त्यागि के परपंच माया सकल जगहिं नचाव ॥ १ ॥
साँच की तू चाल गहि ले झूँठ कपट बहाव ।
रहनि सों लौ लीन ह्वै गुरु-ज्ञान ध्यान जगाव ॥ २ ॥
जोग की यह सहज जुक्ति बिचारि कै ठहराव ।
प्रेम प्रीति सो लागि के घट सहजहीं सुख पाव ॥ ३ ॥
दृष्टि तें अदृष्टि देखो सुरति निरति बसाव ।
आतमा निर्धार निर्भौ बानि अनुभव गाव ॥ ४ ॥
अचल अस्थिर[1] ब्रह्म सेवो भाव चित अरुझाव ।
भीखा फिर नहिं कबहुँ पैहौ बहुरि ऐसो दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

भजि लेहु आतम रामै, मन तुम भजि लेहु आतम रामै ॥टेक॥
यह माया बिस्तार खड़ा है, जग परपंच हरामै ॥१॥
सुत कलित्र[2] धन बिषै सुक्ख दुख, अंत माया केहि कामै ॥२॥
दिन दिन घरि पल समय जातु है, तन काँचो सुठि[3] खामै[4] ॥३॥
हाड़ मास नस रुधिर को बेठन, रूप रँगीलो चामै ॥४॥
जा को बेद बेदांत प्रसंसत, घट घट केवल नामै ॥५॥
सतगुरु कृपा गयो कोउ तहवाँ, जहवाँ छाँह न घामै ॥६॥
जहँ जैसो तहँ तैसो साहब, लाल गोर कहुँ स्यामै ॥७॥
अवलोकहु[5] हरि रूप बैठि के, सुन्न निरंतर धामै ॥८॥
व्यापक ब्रह्म चहूँ जुग पूरन, है सब में सब तामैं[6] ॥९॥
आगे पाछे अर्ध उर्ध जोइ, सोइ दहिने सोइ बामै ॥१०॥

---

(१) स्थिर । (२) स्त्री । (३) सुन्दर । (४) बेकाम । (५) देखो । (६) तिस में ।

भीखा भजन को दाँव बनो है, ई है दम इह दामै ॥११॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम राम नाम चित धारो ।
जो निज कर अपनो भल चाहो, ममता मोह बिसारो ॥१॥
अंदर में परपंच बसायो, बाहर भेख सँवारो ।
बहु बिपरीति कपट चतुराई, बिन हरि भजन बिकारो ॥२॥
जप तप मख[1] करि बिधि बिधान, जत तत उदबेग निवारो ।
बिन गुरु लच्छ सुदृष्टि न आवै, जन्म मरन दुख भारो ॥३॥
ज्ञान ध्यान उर करहु धरहु दृढ़, सब्द सरूप बिचारो ।
कह भीखा लौलीन रहो उत, इत मत[2] सुरति उतारो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

जग के करम बहुत कठिनाई । तातें भरमि भरमि जहँड़ाई[3] ॥
ज्ञानवंत अज्ञान होत है, बूढ़ करत लरिकाई ।
परमारथ तजि स्वारथ सेवहि, यह धौं कौनि बड़ाई ॥ १ ॥
बेद बेदान्त को अर्थ बिचारहिं, बहु बिधि रुचि उपजाई ।
माया मोह ग्रसित निस बासर, कौन बड़ो सुखदाई ॥ २ ॥
लेहि बिसाहि[4] काँच को सौदा, सोना नाम गँवाई ।
अमृत तजि बिष अँचवन लागे, यह धौं कौनि मिठाई ॥ ३ ॥
गुरु परताप साध की संगति, करहु न काहे भाई ।
अंत समय जब काल गरसि है, कौन करौ चतुराई ॥४॥
मानुष जनम बहुरि नहिं पैहो, बादि[5] चला दिन जाई ।
भीखा कौ मन कपट कुचाली, धरन[6] धरै मुरखाई ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

देखो निज सरूप हरि केरा, ताते कार कौतुकी तेरा ॥टेक॥
प्रभु में संत संत में प्रभु हैं, या में फार न फेरा ।
केवल आतम राम बिराजत, निकटहिं जिय हिय हेरा ॥ १ ॥

---

(१) यज्ञ । (२) नहीं । (३) ठगाते हैं । (४) मोल । (५) मुफ्त । (६) टेक ।

मानुष जन्म याहि करि पायो, भजि ले नाम सबेरा।
बाल कुमार जुबा बिरधापन, होइ होइ जात अबेरा ॥२॥
चेतन प्रान अपान सो जड़, उदान ब्यान महँ डेरा।
कहत है और करत है औरै, बलकत[1] फिरत अनेरा[2] ॥३॥
यह मन कठिन कठोर अपर्बल, कियो सकल जग जेरा[3]।
माया मोह में फँसि गयो, भयो सुत कलित्र[4] धन चेरा ॥४॥
आयू[5] घटत बढ़त तन देखत, लाभ लोभ तन घेरा।
आवत जात चरख[6] चौरासी, करम न करत निबेरा ॥५॥
सिर पर काल बसत निसु बासर, मारत तुरत चबेरा[7]।
काहे न बाँधहु भव उतरन कहँ, सत्त सब्द को बेरा[8] ॥६॥
कहत हैं बेद बेदांत संत पुनि, गुरू कान महँ टेरा।
भीखा भाग बिना नहिं देखत, निकटहिं दीप[9] अँधेरा ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

मन मानि ले रे तू कहल हमार।
फिरि फिरि मानुष जनम न पैहौ, चौरासी अवतार ॥ टेक ॥
पागा माया बिषै मिठाई, काम क्रोध रत सोई।
सुर नर मुनि गन गंधर्ब कछु कछु, चाखत है सब कोई ॥ १ ॥
त्रिबिधि ताप को फंद परो है, सूझत वार न पारा।
काल कराल बसै निकटहिं, धरि मारि नर्क महँ डारा ॥ २ ॥
संत साध मिलि हाट लगायो, सौदा नाम भराई।
जो जा को अधिकार होत तिन, तैसी बस्तु मोलाई ॥ ३ ॥
सब सक्ती धन धाम सकल लै, सरनागति में डारा।
समझो बूझि बिचारि उतारो, अपने सिर को भारा ॥ ४ ॥
जोग जुक्ति कै परचो पैहौ, सुरति निरति ठहराई।
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, अनहद धुनि घहराई ॥ ५ ॥

---

(१) उबलता। (२) बेफ़ायदा। (३) ज़ेर, परास्त। (४) स्त्री। (५) उमर। (६) चक्र। (७) थप्पड़। (८) बेड़ा। (९) चिराग़।

सुरति मगन परमारथ जागै, करम होहि जरि छारा[1]।
ज्ञान ध्यान के खानि खुलै जब, तब छूटै संसारा ॥ ६ ॥
भक्ति भाव कल्पद्रुम छाया, ताप रहै नहिं देई।
चारि पदारथ अज्ञाकारी, पर[2] सों कबहिं न लेई ॥ ७ ॥
राम नाम फल मिलो जाहि को, प्रेम सुधा रस धारा।
पुलकि पुलकि मन पान करो तुम, निस दिन बारम्बारा ॥ ८ ॥
गुरु परताप कहाँ लगि बरनों, उक्ती एक न आई।
रसना जो कहिं होयँ सहसदस, उपमा गाय न जाई ॥ ९ ॥
आतम राम अखंडित आपै, निज साहब बिस्तारा।
भीखा सहज समाधी लावो, अवसर रहै तुम्हारा ॥१०॥

॥ शब्द ७ ॥

समय जून आवन सोइ आई, मन कहहू तैं नहिं पतियाई ॥१॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, देहि अवध नियराई ॥२॥
मूरख तदपि नाहिं चित चिन्ता, मानो करतल[3] भै अमराई[4] ॥३॥
सुर नर मुनि गन गंधर्व दानव, काल करम दुख पाई ॥४॥
ब्रह्मा बिस्नु सीव सनकादि दे[5], प्रभु डर को न डेराई ॥५॥
अमर चिरंजिव लोमस समता[6] तिन पर त्रास जनाई ॥६॥
भीखा निर्भय राम सरन इक, का किये बहुत सिधाई[7] ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

जग में लोभ मोह नर भूलो। तातें नेकु दृष्टि नहिं खूलो ॥टेक॥
नीचे ऊँचे महल उठावहिं, जित पसार धन दर्बा।
सो तैसो गुजरान दिना दस, अंत काल बसि सर्बा[8] ॥१॥
ब्रह्म बोलता छाँड़ि करतु है, लोक बेद के आस।
ज्यों मृग सँग कस्तूरी महकै, सुंघत फिरै बहु घास ॥२॥
काम क्रोध अरु मोर तोर में, मनुआँ भटका खात।
ज्यों केहरि बपु छाँहि कूप लखि, करत आपनी घात[9] ॥३॥

---

(१) राख। (२) पराया या दूसरा। (३) मुट्ठो। (४) समझता है कि न मरना अपने हाथ में है। (५) आदिक। (६) लोमस ऋषि सरीखे जो अमर थे। (७) सिद्धाई। (८) आखिर में सब काल के बस में पड़ेंगे। (९) जैसे शेर अपने रूप की परछाईं कुएँ में देख कर कूद पड़ा और जान गँवाई।

केवल ब्रह्म सकल घट ब्यापक, घाटि कहूँ नहिं पूरा।
आतम राम भर्म के बसि परि, यह आचरज जहूरा ॥४॥
जोग जग्य तप दान नेम करि, चाहत राम को भेंटा।
जल पत्थर करि हरि आराधहिं, बाँझ खेलावहिं बेटा ॥५॥
देवता पितर भूत गन पूजहिं, धरे सो तन विकरारी।
जोति सरूप न आपा चीन्हत, महा सो अधम अनारी ॥६॥
भीखा स्वारथ खेत बोवायो, बीज पुन्न अरु पाप।
जो अघाय सो भोग करत है, करता करम को बाप ॥७॥

॥ शब्द ९ ॥

या जग में रहना दिन चारी। ता तें हरि चरनन चित वारी ॥१॥
सिर पर काल सदा सर[1] साधे। अधसर परे तुरतहीं मारी ॥२॥
भीखा केवल नाम भजे बिनु। प्रापति कष्ट नरक भारी ॥३॥

॥ शब्द १० ॥

मन तुम राम न भजहु सबेरो।
पहर दुपहर तीसरे पहरे, होइ होइ जात अबेरो ॥ १ ॥
आगहु खड़े होहु जीवत माँ, सो केवल हित तेरो।
भ्रम घूँघट पट खोलि बिचारो, सहजहिं मेटि अँधेरो ॥ २ ॥
सतगुरु नैन सैन कै परिचै, होत न लागत देरो।
अचरज महा अलौकिक रचना, देखत निकटहिं नेरो ॥ ३ ॥
सहज समाधि कै चाह करहु तब, आपा परे निबेरो।
खोज खोज कोउ अंत न पायो, सुर नर मुनि बहुतेरो ॥ ४ ॥
तुरिया सब्द उठत अभि[2] अंतर, सोहं सोहं टेरो।
पूरब लिखो अछर अनमूरति, आपुहि चित्र चितेरो ॥ ५ ॥
सब जहाँ लगि रूप तुम्हारा, जल थल बन गिरि हेरो।
कह भीखा इक धन्य तुही है, पटतर[3] द्यों केहि केरो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

जो कोउ राम नाम चित धरै।

(१) बान। (२) घट। (३) उपमा।

तन मन धन न्योछावर वारै, सहज सुफल फल फरै ॥ १ ॥
गुरु परताप साध की संगति, जोग जुक्ति उर भरै ।
इंगला पिंगला सुखमन सोधै, ज्ञान अगिन उदगरै[1] ॥ २ ॥
चाँद सुरज एकागर[2] करि कै, उलटि उरध अनुसरै ।
नाद बिंद को जोहु[3] गगन में, मन माया तब मरै ॥ ३ ॥
आठ पहर नौबत धुनि बाजै, नेक पहल नहिं टरै ।
भीखा सब्द सुनतहिं अबुध बध, अमरख[4] हरख करै ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मन तोहिं कहत कहत सठ हारे ।
ऊपर और अंतर कछु और, नहिं बिस्वास तिहारे ॥ १ ॥
आदिहिं एक अंत पुनि एकै, मद्धहुँ एक बिचारे ।
लबज लबज एहवर ओहवर करि[5], करम दुइत करि डारे ॥ २ ॥
बिषया रत परपंच अपरबल, पाप-पुन्न परचारे ।
काम क्रोध मद लोभ मोह कब, चोर चहत उँजियारे ॥ ३ ॥
कपटी कुटिल कुमति बिभिचारी, हो वा को अधिकारे ।
महा निलज कछु लाज न तो को, दिन दिन प्रति मोहिं जारे ॥४॥
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, बनलिउ[6] बात बिगारे ।
सदा करेहु बेपार कपट को, भरम बजार पसारे ॥ ५ ॥
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन खारे ।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत हो न्यारे ॥ ६ ॥
खोलि कहों[7] तरंग नहिं फेर्‌यो, यह आपुहि महिमा रे ।
बिन फेर कछु भयो न ह्वै है, हम का करहि बिचारे ॥ ७ ॥
हमरी रुचि जग खेल खेलौना, बालक साज सँवारे ।
पिता अनादि अनख[8] नहिं मानहि, राखत रहहि दुलारे ॥ ८ ॥
जप तप भजन सकल हैं बिरथा, ब्यापक जबहि बिसारे ।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमा[9] रे ॥ ९ ॥

(१) जगावै । (२) इकट्ठा । (३) ढूँढ़ । (४) गुस्सा, रंज । (५) लफ़ज़ों को इधर उधर करके । (६) बनी हुई । (७) कभी । (८) नाराज़ी । (९) भीतर घुसी या छिपी हुई ।

॥ शब्द १३ ॥

हे मन राम नाम चित धौबे[1] ।
काहे इत उत धाइ मरतु है। अवसिक भजन राम के कौबे[2] ॥१॥
गुरु परताप साध की संगति, नाम पदारथ रुचि से खौबे ।
हरदम सोहं सब्द उठतु है, बिनल बिमल धुनि गौबे ॥२॥
सुरति निरति अंतर लौ लावै, अनहद नाद गगन घर जौबे ।
रमता राम सकल घट ब्यापक, नाम अनंत एक ठहरौबे ॥३॥
तहाँ गये जग सों जर[3] टूटे, तीनि ताग गुन औगुन नौ[4] बे ।
जनम अस्थान खानपुर बुहना[5], सेवत चरन भिखानंद चौबे ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

सजनी कौल के सोच मोहिं, लगो रहत दिन रजनी ॥टेक॥
इन पाँचा परपंच चलायो, पाप पुन्न की लदनी ।
आयो नफा लेन दियो टूटो[6], मरत बहुत तेहि लजनी[7] ॥१॥
हरिजन हरि चरचा नित बाँटहिं, ज्ञान ध्यान की ददनी[8] ।
मनुवाँ इमिल धुमिल[9] में अरुझेव, छूटलि नाम महजनी[10] ॥२॥
जगन्नाथ जग बिदित सकल घट, ब्रह्म सरूप बिरजनी[11] ।
खासा आपे आपु न परखत, बिषै बिसाहत[12] ममनी[13] ॥३॥
अंदर की प्रभु सब जानत धौं, काह मौज मेरी बमनी[14] ।
कोर[15] तनिक जेहिं ओर कृपा कियो, भीखा भाग तेहि जगनी ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

मन तुम लागहु सुद्ध सरूपे ॥टेक॥
तन मन धन न्यौछावरि वारो बेगि तजो भव कूपे ॥ १ ॥
सतगुरु कृपा तहाँ लै लावो जहाँ छाँह नहिं धूपे ॥ २ ॥

---

(१) धर। (२) कर। (३) जड़। (४) तोन गुनों का तागा अर्थात् सत, रज, तम, और नौ औगुन अर्थात पाँच भूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार और चार विषय अर्थात् आसा, मनसा, ईर्षा, विरोध। (५) आज़मगढ़ के जिले में एक गाँव का नाम जहाँ भीखा साहब पैदा हुए थे। (६) घाटा। (७) लाज। (८) पेशगो दाम। (९) मलीन ब्यौहार। (१०) महाजनो। (११) बिराजमान। (१२) मोल लेता है। (१३) ममता। (१४) टेढ़ी। (१५) तिरछी चितवन।

पइया[१] करम ध्यान सों फटको जोग जुक्ति करि सूपे ॥ ३ ॥
निर्मल भयो ज्ञान उँजियारो गुंग भयो लखि चूपे ॥ ४ ॥
भीखा दिब्य दृष्टि सों देखत सोहं बोलत मू पे ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

मन तुम छोड़हु सकल उदासी ।
राम को नाम तीर्थ घट ही में, दिल द्वारिका औ काया कासी ॥ १ ॥
करते जग अपने कर बाँधो, तिरगुन डोरि की फाँसी ।
भिन्न भिन्न निज गुन बरतावहिं, काहू कै कछु न सिरासी[२] ॥ २ ॥
तेहि तें कनक कामनी अरुझो, हरि सों सदा निरासी ।
अंतै नैन स्रवन अंतै है, रसना अन्तै साँसी ॥ ३ ॥
ब्रह्म सरूप अनूप भूप बर, सोभा सुख को रासी ।
केवल आतम राम बिराजत, परमातम अबिनासी ॥ ४ ॥
अपरंपार अखंडित बानी, अकथ कथो नहिं जासी ।
सो परभाव प्रगट सतसंगति, जोग जुगत अभ्यासी ॥ ५ ॥
सतगुरु ज्ञान बान जेहिं मार्‍यो, लगी मरम उर गाँसी ।
घायल घुरमित[३] उलटि गयो त्यों, चेतन उदित प्रकासी ॥ ६ ॥
जग समुद्र नवका[४] नर देही, कनिहर[५] गुरु बिस्वासी ।
अमृत हरि को नाम सजीवन, चाखत छकि न अघासी ॥ ७ ॥
बेद बेदांत संत मुख भाखहिं, धन्य जो नाम उपासी ।
मन क्रम बचन जु हरि रँग राते, तजे जगत उपहाँसी ॥ ८ ॥
जो एकै ब्यापक आतम तौ, को ठाकुर को दासी ।
ब्रह्म स्वरूप है साहब सेवक, दिब्य दृष्टि है खासी ॥ ९ ॥
अलख राम को लखै सोई जन, जो भ्रम भीति को ढासी[६] ।
सोइ जोगी जोगेसुर ध्यानी, जा की रहनि अकासी ॥१०॥
हरि सों प्रीति निरंतर दिन दिन, छूटी भूख पियासी ।
सुरति मिली अवलोकि निरति महँ, कहँ आवे कहँ जासी ॥११॥

---

(१) खोखला धान, और पई एक कीड़े का भी नाम है जो अन्न में पड़ जाता है ।
(२) बस चलना । (३) घूमता हुआ । (४) नाव । (५) खेवट । (६) गिरा देवै ।

त्यागि सकल परपंच बिषै हरि, ताहि मिलै अन्यासी[1]।
निरमोही निर्बान निरंजन, निरममता सन्यासी ॥१२॥
मोहनभोग सेख[2] लै बैठो, सुन्न में आसन डासी।
भीखा पावत[3] मगन रैन दिन, टाटक[4] होत न बासी ॥१३॥

॥ शब्द १७ ॥

निज घर काहे न आवत मन तुम।
सिर पर काल कराल घटा लै, तन को त्रास दिखावत ॥टेक॥
अनहद नाद गगन घहरानो, आयुस[5] समय जनावत।
हेइ होउ[6] आजु कालि दिन बीतत, भ्रम बसि चेत न आवत ॥१॥
जब आयो तब का कहि आयो, जाहु तो का कहि जावत।
अगुवन[7] चेतु समय बीते पर, पाछे काम नसावत ॥२॥
सतसंगति करु ज्ञान को संग्रह, सुरति निरति सुरझावत।
आतम राम प्रकास को छाजा, जम जल निकट न आवत ॥३॥
जल भरि थल भरि पूरन उमग्यो, भाव रहस्य[8] बढ़ावत।
जहँ देखो तहँ रूपहि भासै, आपुहिं आपु दरसावत ॥४॥
घर में मौज बाहर फिर मौजै, मौजै मौज बनावत।
कह भीखा सब मौज साहब की, मौजी आपु कहावत ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

जो कोउ या बिधि हरि हिय लावै।
खेती बनिज चाकरी मन तें, कपट कुचाल बहावै ॥ १ ॥
या बिधि करम अधर्म करतु है, ऊसर बीज बोवावै।
कोटि कला करि जतन करै जो, अंत सो निस्फल जावै ॥ २ ॥
चौरासी लक्ष जीव जहाँ लगु, भ्रमि भ्रमि भटका खावै।
सुरसरि[9] नाम सरूप की धारा, सो तजि छाँहि[10] गहावै ॥ ३ ॥
सतगुरु बचन सत्त सुकिरित सों, नित नव प्रीति बढ़ावै।

(१) आप से आप। (२) गुरु, मुर्शिद। (३) खाता है। (४) ताजा। (५) जिन्दगी। (६) इस उस काम में। (७) आगे से। (८) आनन्द। (९) गंगा जी। (१०) प्रतिबिम्ब, छाईं।

भीखा उमग्यो सावन भादों, आपु तें आपु समावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

निज रँग रातहु हो धनियाँ[१] । तजि लोक लाज कुल कनियाँ[२] ॥टेक॥
या में भला कछुक हमरिउ, तुम्हरे सँग सदा रहनियाँ ।
भजनो सही तबहिं परि है, जब सकल करम भ्रम भनियाँ[३] ॥१॥
मैं अपनी उत्पति परलै दुख, कहँ लग कहौं अनगिनियाँ ।
जो इत के सुख बिष सम जानै, सो उत साध परनियाँ[४] ॥२॥
नहिं तौ जल बुंद होइ बिनसहुगे, अबला[५] बुद्धि नदनियाँ ।
हरि बिनु सब रँग उतरि जाहिंगे, मनि मोती कर पनियाँ ॥३॥
अनमिल मिलै बहुत हरखै, ज्यों पाइ मगन मन फनियाँ[६] ।
मनुष जन्म बड़ भाग मिलो, गुरु ज्ञान ध्यान कै बनियाँ ॥४॥
जोगहिं कोल्हु जुगत लै पेरो, बिषै सकल कर घनियाँ ।
या हरि रस को पियत कोई कोइ, खोदि[७] दुइत को छनियाँ ॥५॥
ब्यापक जहाँ तहाँ लग साहब, जक्त बिदित दिल जनियाँ ।
मन भयो ब्रह्म जीव नहिं दोसर, अबिगति अकथ कहनियाँ ॥६॥
हरदम नाम उठत अभि अंतर, अनुभव मधुर बचनियाँ ।
सुनत सुनत दिल मौज जगी, लगी सुरति निरति उनमुनियाँ ॥७॥
साहब अलख को कौन लखै, सब थके देव मुनि जनियाँ ।
राजा राम सरूप आतमा, दृष्टि मिली पिय रनियाँ ॥८॥
होइ निरास आसा सब त्यागै, सो केवल निरबनियाँ ।
कह भीखा धनि भाग ताहि जेहिं, लाभ नहीं कछु हनियाँ[८] ॥९॥

॥ शब्द २० ॥

समुझि गहो हरिनाम, मन तुम समुझि गहो हरिनाम ॥ टेक ॥
दिन दस सुख यहि तन के कारन, लपटि रहो धन धाम ॥१॥
देखु बिचारि जिया अपने, जत[९] गुनना गुन न बेकाम ॥२॥
जोग जुक्ति अरु ज्ञान ध्यान तें, निकट सुलभ नहिं लाम[१०] ॥३॥

(१) स्त्री । (२) लाज । (३) नष्ट होना । (४) भागना । (५) स्त्री । (६) साँप । (७) खोदी तिनका और किनका । (८) हानि, घाटा । (९) जितना । (१०) दूर ।

इत उत की अब आसा तजि कै, मिलि रहु आतम राम ॥४॥
भीखा दीन कहाँ लगि बरनै, धन्य घरी वहि जाम[१] ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

राम सों करु प्रीति हे मन, राम सों करु प्रीति ॥१॥
राम बिना कोउ काम न आवे, अंत ढहो जिमि भीति[२] ॥२॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपनो, हरि बिन नहिं कोउ हीति[३] ॥३॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज, धरु भीखा उर चीति ॥४॥

गुरु और नाम महिमा

॥ शब्द १ ॥

बीते बारह बरस उपजी राम नाम सों प्रीति।
निपट लागि चटपटी मानो चारिउ पन गयो बीति ॥ १ ॥
नहिं खान पान सोहात तेहिं छिन बहुत तन दुर्बल हुवा।
घर ग्राम लाग्यो बिषम[४] धन मानो सकल हारो है जुवा ॥ २ ॥
ज्यों मृगा जूथ[५] से फूटि परु चित चकित ह्वै बहुतै डरो।
ढुँढ़त ब्याकुल बस्तु जनुकै[६] हाथ सों कछु गिरि परो ॥ ३ ॥
सतसंग खोजो चित्त सों जहँ बसत अलख अलेख।
कृपा करि कब मिलहिंगे दहुँ[७] कहाँ कौने भेष ॥ ४ ॥
कोउ कहेउ साधू बहु बनारस भक्ति बीज सदा रह्यौ।
तहँ शास्त्र मत को ज्ञान है गुरु भेद काहू नहिं कह्यौ ॥ ५ ॥
दिन दोय चारि बिचारि देख्यों भरम करम अपार है।
बहु सेव पूजा कीरतन मन माया रत ब्योहार है ॥ ६ ॥
चल्यों बिरह जगाय छिन छिन उठत मन अनुराग।
दहुँ[७] कौन दिन अरु घरी पल कब खुलैगो मम भाग ॥ ७ ॥
बहु रेखता अरु कबित साखी सब्द सों मन मान।
सोइ लिखत सीखत पढ़त निसु दिन करत हरि गुन गान ॥८॥
इक ध्रुपद बहुत बिचत्र सूनत भोग[८] पूछेउ है कहाँ।

---

(१) पहर। (२) दीवार। (३) मित्र। (४) जो सहा न जाय। (५) झुण्ड। (६) जैसे। (७) धौं, न मालूम। (८) आखिरी कड़ी जिसमें बनाने वाले का नाम रहता है।

नियरे भुरकुड़ा ग्राम[१] जाके सब्द आपे है तहाँ ॥९॥
चोप लागी बहुत जाय के चरन पर सिर नाइया ।
पूछेउ कहा कहि दियो आदर सहित मोहिं बैसाइया ॥१०॥
गुरु भाव बूझि मगन भयो मानो जन्म को फल पाइया ।
लखि प्रीति दरद दयाल दरवे[२] आपनो अपनाइया ॥११॥
आतमा निज रूप साँचो कहत हम करि कसम कै ।
भीखा आपे आपु घट घट बोलता सोहमस्मिकै[३] ॥१२॥

॥ शब्द २ ॥

मनुवाँ सब्द सुनत सुख पावै ॥ टेक ॥
जेहिं बिधि धुधुकत नाद अनाहद तेहिं बिधि सुरत लगावै ॥१॥
बानी बिमल उठत निसु बासर नेक बिलंब न लावै ॥२॥
पूरा आप करहि पर कारज नरक तें जीव बचावै ॥३॥
नाम प्रताप सबन के ऊपर बिछुरो ताहि मिलावै ॥४॥
कह भीखा बलि बलि सतगुरु की यह उपकार कहावै ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

मनुवाँ नाम भजत सुख लीया ॥ टेक ॥
जन्म जन्म कै उरझनि पुरझनि समुझत करकत हीया ।
यह तो माया फाँस कठिन है का धन सुत बित[४] तीया[५] ॥१॥
सत्त सब्द तन सागर माहीं रतन अमोलक पीया ।
आपा तजै धसै सो पावै ले निकसै मरजीया[६] ॥२॥
सुरति निरति लौलीन भयो जब दृष्टि रूप मिलि थीया[७] ।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु[८] जुक्ति जमावो बीया ॥३॥
सतगुरु भये दयाल ततच्छिन[९] करना या सो कीया ।
कहै भीखा परकासी कहिये घर अरु बाहर दीया[१०] ॥४॥

---

(१) नाम एक गाँव का जहाँ गोविन्द साहब का स्थान था जिन से भीखा साहब ने उपदेश लिया । (२) प्रसन्न हुए । (३) सोहं अस्मि = वह मैं हूँ । (४) धन । (५) लिया, स्त्री । (६) समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने वाला । (७) थिर हुआ । (८) पेड़ । (९) तुर्त । (१०) चिराग़ ।

॥ शब्द ४ ॥

धुनि बजत गगन महँ बीना ।
जहँ आपु रास रस भीना ॥ टेक ॥
भेरी[1] ढोल संख सहनाई, ताल मृदंग नवीना ।
सुर जहँ बहुतै मौज सहज उठि, परत है ताल प्रबीना ॥१॥
बाजत अनहद नाद गहागह, धुधुक्रि धुधुकि सुर झीना ।
अँगुली फिरत तार सातहुँ पर, लय निकसत भिन भीना[2] ॥२॥
पाँच पचीस बजावत गावत, निर्त चारु[3] छबि दीना ।
उघटत तननन धितां धितां, कोउ ताथेइ थेइ तत कीना ॥३॥
बाजत जल तरंग बहु मानो, जंत्री जंत्र कर लीन्हा ।
सुनत सुनत जिव थकित भयो, मानो ह्वै गयो सब्द अधीना ॥४॥
गावत मधुर चढ़ाय उतारत, रुनझुन रुनझुन धीना[4] ।
कटि किंकिनि पगु नूपुर की छबि, सुरति निरति लौलीना ॥५॥
आदि सब्द ओंकार उठतु है, अटुत रहत सब दीना[5] ।
लागी लगन निरंतर प्रभु सों, भीखा जल मन मीना ॥६॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु सब्द सरोवर घाट सुनत मन चुभुकैला[6] ॥ टेक ॥
पाँच पचीस गुन गावहीं, ह्वाँ ताल मृदंग उबाट,
कछुक झुन घुमकैला[7] ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो, लगि दृष्टि रूप क साँट[8],
देखत मन पुलकैला ॥ २ ॥
नाद अनाहद खान खुलो जब, सुन्न सहर में हाट,
धुधुकि धुन धुधुकैला ॥ ३ ॥
भीखा के प्रभु बैठे देखत, भाव सहज सुख खाट,
मगन मन हुलसैला ॥ ४ ॥

---

(१) एक बाजे का नाम । (२) भीनी भीनी । (३) सुन्दर । (४) ताधिन ताधिन । (५) सब दिन यानी सदा एक रस रहता है । (६) डुबकी लगाता है । (७) गुञ्जार की आवाज आती है । (८) मिलाप, लपेट ।

॥ शब्द ६ ॥

गुरु दाता छत्री सुनि पाया । सिष्य होन द्विज[1] जाचक आया ॥
देखत सुभग[2] सुंदर अति काया । बचन सप्रेम दीन पर दाया ॥
बूझि बिचारि समुझि ठहराया । तन मन सों चरनन चित लाया ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गत माया[3] । कृपा करहिं जानहिं निज जाया[4] ॥
साहब आपै आप निराल । आतम राम को नाम गुलाल[5] ॥
सर्ब दान दियो रूप बिचारी । पाय मगन भयो बिप्र[6] भिखारी ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं डाहतु है मन माया ॥ टेक ॥
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया ।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया ॥ १ ॥
परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया ।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया ॥ २ ॥
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाचै, जो सोधै निज काया ।
भीखा यह जग रतो[7] कनक पर, कामिनि हाथ बिकाया ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मेरो हित सोइ जो गुरु ज्ञान सुनावै ॥ टेक ॥
दूजी दृष्टि दुष्ट सम लागै, मन उनमेख[8] बढ़ावै ।
आतम राम सूछम सरूप, केहि पटतर[9] दै समझावै ॥१॥
सब्द प्रकास बिनाहिं[10] जोग बिधि, जगमग जोति जगावै ।
धन्य भाग ता चरन रेनु ले, भीखा सीस चढ़ावै ॥२॥

॥ शब्द ९ ॥

जो सत सब्द लखावै सोइ आपन हित हेरा ॥ टेक ॥
यहि सिवाय परपंच कर्म बस, सकल दुष्ट भ्रम घेरा ॥ १ ॥
ब्रह्म सरूप प्रगट घट घट में, अनचिन्हार सब केरा ॥ २ ॥
जेहिं बिधि कहत बेदांत, संत मुख सो कहि करत निबेरा ॥ ३ ॥

---

(१) भीखा साहब जाति के ब्राह्मण थे और उनके गुरू गुलाल साहब छत्री । (२) सुभ अंग । (३) माया छूटती जाती है । (४) पुत्र । (५) भीखा साहब के गुरू का नाम । (६) ब्राह्मण । (७) मोहित हुआ । (८) तरंग । (९) उपमा । (१०) बगैर ।

तन मन वार तिनहिं पर दीन्हो, पर्‍यो चरन बिच डेरा ॥४॥
भीखा जाहि मिलैं गुरु गोबिंद, वै साहब हम चेरा ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

को लखि सकै राम को नाम ॥ टेक ॥
देइ करि कौल करार बिसारो, जियना बिनु भजन हराम ॥
बरनत बेद बेदांत चहूँ जुग, नहिं अस्थिर पावत बिसराम ॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत, भटकत फिरत भोर अरु साम ॥
सुर नर मुनि गन पचि पचि हारे, अंत न मिलत बहुत सो लाम[1] ॥
साहब अलख अलेख निकट हीं, घट घट नूर ब्रह्म को धाम ॥
खोजत नारद सारद अस अस, जातु है समय दिवस अरु जाम ॥
सुगम उपाय जुक्ति मिलवे की, भीखा इह सतगुरु से काम ॥

॥ शब्द ११ ॥

देह धरि जन्म बृथा गैलो ॥ टेक ॥
पाँच तत्त गुन तीनि संग लिये, कबहिं न सरनागत अैलो ॥
साधु संग कबहूँ नहिं कीन्हो, माया बस सब दिन गैलो ॥
ऐसहि जन्म सिरात[2] रे प्रानी, राम नाम चित नहिं कैलो ॥
कियो करार नाम भजिबे को, अनमिल ब्याह गवन भैलो ॥
सतगुरु सब्द हिये महँ राखो, हर दम लाभ उदै भैलो ॥
भीखा को मन थीर होत नहिं, सतगुरु सत्त पच्छ धैलो ॥

॥ शब्द १२ ॥

होहु सु ;केवल राम की सरन, ना तौ जन्म औ फेरि मरन ॥
तीरथ ब्रत आदि देवा पूजन जजन, सत नाम जाने बिना नर्क परन ॥
सब्द प्रकास जाने नैन स्रवन, गूँगा गुड़ को हिसाब कहे सो कवन ॥
अलख के लखन को अजपा जपन, अबिगति गतिन को अकथ कथन ॥
देह न ग्रेह आदि कर्म करन, पुरुष पुरान जा को बिदित बरन ॥
भीखा जल थल नभ रमता रमन, ता के मिलिबे को गुरु कह्यो सो जतन ॥

(१) दूर। (२) बीतना।

॥ शब्द १३ ॥

नामै चाँद सूर दिन राती । नामै किरतिम[१] की उतपाती[२] ॥१॥
नाम सरसुती जमुना गंगा । नामै सात समुद्र तरंगा ॥२॥
नामै गहिर अगूढ़ अथाह । असरन सरन को चरन निबाह ॥३॥
मूल गायत्री ओअंकार । तत तुरिया पद सूच्छम सार ॥४॥
पलक दरियाव पुरो हरिनाम । नाम ठाकुर सालिगराम ॥५॥
सिव ब्रह्मा मुनि सबको नायक । बीठल नाथ साहब सुखदायक ॥६॥
नामै पानी नामै पवना । ररंकार मंगल सुख रवना[३] ॥७॥
नामै धरती नाम अकास । नामै पावक तेज प्रकास ॥८॥
नाम महादेवन को देवा । नामै पूजा करता सेवा ॥९॥
नाम जक्त गुरु नामै दाता । नामै अज[४] बिज्ञान बिधाता ॥१०॥
नाम सुमेर महा गंभीर । नामै पारस मलयागीर ॥११॥
नाम असोक सोक सों रहिता । कल्पद्रुम नामहिं को कहिता॥१२॥
नामै रिद्धि सिद्धि को करता । नामै कामधेनु ह्वै भरता ॥१३॥
नामै अर्ध उर्ध ह्वै आये । चारि खान में नाम समाये ॥१४॥
धनराज धनंजै धमहुँ ओई । नामै अगन गनै का कोई ॥१५॥
नामै प्रानायाम कहाये । सोहं सोहं नामै गाये ॥१६॥
नामै सुंदर नूर जहूर । नामै लाये निकट हजूर ॥१७॥
नाम अनादि एक को एक । भीखा सब्द सरूप अनेक ॥१८॥

जोगी और जोगीश्वर महिमा

॥ शब्द १ ॥

भजन तें उत्तम नाम फकीर ।
छिमा सील संतोष सरल चित दरदवंद पर पीर ॥ टेक ॥
कोमल गदगद गिरा[५] सोहावन प्रेम सुधा रस छीर ।
अनहद नाद सदा फल पायो भोग खाँड़ घृत खीर ॥ १ ॥
ब्रह्म प्रकास को भेख बनायो नाम मेखला चीर ।
चमकत नूर जहूर जगामग ढाँके सकल सरीर ॥ २ ॥

(१) माया । (२) उत्पत्ति । (३) बिलास । (४) ब्रह्मा । (५) बानी ।

रहनि अचल अस्थिर कर आसन ज्ञान बुद्धि मति धीर ।
देखत आतम राम उघारे ज्यों दरपन मद्धे हीर ॥ ३ ॥
मोह नदी भ्रम भँवर कठिन है पाप पुन्य दोउ तीर ।
हरि जन सहजे उतरि गये ज्यों सूखे ताल को झीर[1] ॥ ४ ॥
जग परपंच करम बहतो है जैसे पवन अरु नीर ।
गुरु गम सब्द समुद्रहिं जावे परत भयो जल थीर ॥ ५ ॥
केलि करत जिय लहरि पिया सँग मति बड़ गहिर गँभीर ।
ताहि काहि पटतरो[2] दीजै जिन तन मन दियो सीर ॥ ६ ॥
मन मतंग मतवार बड़ो है सब ऊपर बल बीर ।
भीखा हीन मलीन ताहि को छीन भयो जस जीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु साहब नाम पारसी, पारस मों चित लावै ।
जाहि नाम तें सिव सनकादिक, ब्रह्मा बिस्नु कहावै ॥ १ ॥
ता के सुर नर मुनि गन देवा, सेवा सुमिरन ध्यावै ।
मध्य सरस्वति गंगा जमुना, सन्मुख सीस नवावै ॥ २ ॥
त्रिस्ना राग द्वेस नहिं तहवाँ, जहवाँ सोहं बोलै ।
ज्ञान बोध बिनु दृष्टि बिलोकै, उर्ध कपाटहिं खोलै ॥ ३ ॥
मूल पेड़ अरु साखा पत्र नहिं, फूल बिना फल लागे ।
जंत्र बिना जंत्री धुनि सुनिये, सब्द अभय पद जागे ॥ ४ ॥
ता अस्थान मकान किये, होय नाद बिंद को मेला ।
आतम देह समान बिचारो, जोई गुरु सोइ चेला ॥ ५ ॥
सो है फाजिल संत महरमी[3], पूरन ब्रह्म समावै ।
एकै सोन[4] बहुत बिधि गहना, समुझै द्वैत नसावै ॥ ६ ॥
ता की सरन साँच है जानहि, अजर अमर जन सोई ।
उटन बिटन[5] बरतन माटी को, चेतन मरे न कोई ॥ ७ ॥

(१) छिछला पानी । (२) उपमा । (३) भेदी । (४) सोना । (५) बनना और बिगड़ना ।

अनुभव प्रेम उज्जल परमारथ, रूप अलग दरसावै ।
कह भीखा वह जागर्त जोगी, सहज समाधि लगावै ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु सब्द कवन गुन गुनी, तहँ उठत लहरि पुनि पुनी ॥टेक॥
पाँच घोड़ चंचल घट भीतर, मन गयंद बड़ खुनी[१] ॥१॥
ज्ञान अगिन तन कुंड सकल धरि, जोग जुक्ति करि हुनी[२] ॥२॥
सुरति निरति अंतर लै लावो, गगन गरज धुनि सुनी ॥३॥
जन भीखा तेहिं पदहिं समानो, धन[३] जोगेस्वर मुनी ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सब महँ निज पहिचानी, जग पूरन चारिउ खानी ॥१॥
अविगत अलख अखंड अमूरति, कोउ देखे गुरु ज्ञानी ॥२॥
ता पद जाय कोऊ कोउ पहुँचे, जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥३॥
भीखा धन जो हरि रँग राते, सोइ है साधु पुरानी ॥४॥

बिनती

॥ शब्द १ ॥

प्रभु जी करहु अपनी चेर ।
मैं तो सदा जनम को रिनिया, लेहु लिखि मोहिं केर ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह, करत सबहिन जेर ।
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, परे करम के फेर ॥ २ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ऐसे ऐसे ढेर ।
खोजत सहज समाधि लगाये, प्रभु को नाम न नेर ॥ ३ ॥
अपरंपार अपार है साहब, होय अधीन तन हेर ।
गुरु परताप साध की संगति, छुटे सो काल अहेर[४] ॥ ४ ॥
त्राहि त्राहि सरनागत आयो, प्रभु दरवो[५] यहि बेर ।
जन भीखा को उरिन कीजिये, अब कागद जिन हेर ॥ ५ ॥

---

(१) हाथी रूपी मन बड़ा खूनी है। (२) होम। (३) धन्य। (४) शिकार। (५) दया कीजिये।

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी नहिं आवत मोहिं होस।

राम नाम मन में नहिं आवत काकर करों भरोस ॥ १ ॥
माला तिलक बनाय बहुत बिधि बिन बिस्वास कै तोस[1]।
सुमिरन भजन साँच नहिं कीन्हो मन माने को पोस ॥ २ ॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान ध्यान में लगै तजै तन जोस।
यह संसार काम नहिं आवै जैसे तृन पर ओस ॥ ३ ॥
खोजत सब कोइ अंत न पावै काला मैं का कोस[2]।
आतम राम सरूप निकट हीं माल सुंदर बड़ ठोस ॥ ४ ॥
भीखा को मन कपट कुचाली दिन दिन होइ फरमोस[3]।
कारन कवन सब्द होइ मेला यही बड़ा अपसोस ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

अस करिये साहब दाया ॥ टेक ॥

कृपा कटाच्छ होइ जेहि तें प्रभु, छूटि जाय मन माया ॥ १ ॥
सोवत मोह निसा निस बासर, तुमहीं मोहिं जगाया ॥ २ ॥
जनमत मरत अनेक बार, तुम सतगुरु होय लखाया ॥ ३ ॥
भीखा केवल एक रूप हरि, ब्यापक त्रिभुवन राया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सरनागत दीन दयाला की, प्रभु करु आयसु[4] प्रतिपाला की ॥
जो जिय महँ निस्चै आवै, तौ संक[5] कर्म नहिं काला की ॥
ज्ञान ध्यान कहा जोग जुक्ति है, चीन्ह तिलक अरु माला की ॥
जा पर होहु दयाल महा प्रभु, धन्य भाग तेहि ताला[6] की ॥
पिता अनादि कृपा करिकै, अपराध छिमो निज बाला की ॥
भीखा मन परलाप[7] बड़ा, कहि साँच बजावत गाला की ॥

---

(१) सामान। (२) अहं लिये हुए मालिक को ढूँढ़ते हैं इससे उस तक नहीं पहुँचते—रास्ता काला कोस अर्थात बहुत लम्बा हो जाता है। (३) फ़रामोश, भूल। (४) आज्ञा। (५) शंका, डर। (६) भाग्य, तक़दीर। (७) बकवाद।

॥ शब्द ५ ॥

यार हो हँसि बोलहु मोसों, भरम गाँठि छूटै प्रभु तोसों ॥
पालन करि आये मो कहँ तुम, खाय जियाय कियो घर पोसो ॥
बचन मेटि मैं कहौं गरज बसि, दरदवंद प्रभु करो न गोसो[1] ॥
हो करता करमन के दाता, आगे बुधि आवत नहिं होसो ॥
तुम अंतरजामी सब जानो, भीखा कहा करहि अपसोसो ॥

॥ शब्द ६ ॥

दीजै हो प्रभु बास चरन में, मन अस्थिर नहिं पास ॥ १ ॥
हौं सठ सदा जीव को काँचो, नहिं समात उर साँस ॥ २ ॥
भीखा पतित जानि जनि छोड़ो, जक्त करैगो हाँस ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं राखो जी अपनी सरन ॥ टेक ॥
अपरम्पार पार नहिं तेरो, काह कहौं का करन ॥ १ ॥
मन क्रम बचन आस इक तेरी, होउ जनम या मरन ॥ २ ॥
अबिरल भक्ति के कारन तुम पर, है ब्राह्मन देउँ धरन[2] ॥ ३ ॥
जन भीखा अभिलाख इहो नहिं, चहौं मुक्ति गति तरन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु दीन दयाल दया तु करो, मन माया को उनमेख[3] हरो ॥टेक॥
बोलत अपरम्पार है साहब, कपट अबिद्या भरम छरो[4] ।
पेट आन मुख आन बतावत, यहि जग को परपंच जरो ॥१॥
अधम-उधारन सोक-नसावन, उदय करावन नाम धरो ।
त्राहि त्राहि प्रभु सरन तिहारी, यहि बाना को लाज करो ॥२॥
रमिता राम सकल घट पूरन, नैनन नूर जहूर झरो ।
भीखा केवल ब्रह्म बिराजत, आतम फूल सरूप फरो ॥३॥

॥ शब्द ९ ॥

करुनामय हरि करुना करिये, कृपा कटाच्छ ढरन ढरिये ॥टेक॥

(१) गुस्सा, या फ़ारसी का लफ्ज़ गोश जिस का अर्थ कान है। (२) धरना। (३) कुचाल। (४) ठग लिया।

भक्तन को प्रतिपाल करन को, चरन कँवल हिरदै धरिये ॥१॥
व्यापक पूरन जहाँ तहाँ लगु, रीतो[1] न कहूँ भरन भरिये ॥२॥
अब की बार सवाल राखिये, नाम सदा इक फर[2] फरिये ॥३॥
जन भीखा के दाता सतगुरु, नूर जहूर बरन बरिये ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

ए साहब तुम दीनदयाला । आयहु करत सदा प्रतिपाला ॥
केतिक अधम तरे तुम चरनन । करम[3] तुम्हार कहा कहिं जाला[4] ॥
मन उनमेख[5] छुटत नहिं कबहीं, सौच[6] तिलक पहिरे गल माला ॥
तिनकौ कृपा करहु जेहिं जन पर, खुल्यो भाग तासु को ताला ॥
भीखा हरि नटवर[7] बहु रूपी, जानहिं आपु आपनी काला[8] ॥

॥ शब्द ११ ॥

तुम धनि धनि साहब आपे हो, तहवाँ पुन्न न पापे हो ॥टेक॥
जत निरगुन तत सरगुन साँईं, केवल तुम परतापे हो ॥१॥
रमिता राम तुम अंतरजामी, सोहं अजपा जापे हो ॥२॥
अद्वै ब्रह्म निरंतर बासी, प्रगट रूप निज ढाँपे हो ॥३॥
चहुँ जुग किर्त किर्त कीयो तुम, जेहि सुकर[9] सिर थापे हो ॥४॥
भीखा सिसु[10] अवलंब[11] रावरो, तुमहिं माय अरु बापे हो ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु राम नाम कैसे जानों, मन करत बिषै कुटिलाई ।
काम क्रोध मद लोभ मोह तें, सवकस[12] कबहुँ न पाई ॥ १ ॥
पाप पुन्न जुग[13] बिर्छ लगे हैं, जन्म मरन फल पाई ।
डार पात के फिरत फेर में, चेतन नाम गँवाई ॥ २ ॥
जग परपंच को जाल पसारो, चारिउ खान बझाई ।
सोई बाचै याहि फंद से, जेहि आपु से लेहिं छोड़ाई ॥ ३ ॥

---

(१) ख़ाली । (२) फल । (३) बख्शिश । (४) कहा जा सकता है । (५) कुचाल । (६) बदन की सफ़ाई, नहाना वगैरह । (७) नट । (८) कला, चरित्र । (९) जिसके सीस पर तुमने अपना सुन्दर हाथ धरा उसे चारो जुग में कृतार्थ कर दिया । (१०) बालक । (११) सहारा । (१२) सावकाश । (१३) जुगल, दो ।

आरत[1] है जन बिनय करतु है, सरन सरन गोहराई ।
भीखा कहै कुफुर[2] तब टूटै, जब साहब करहिं सहाई ॥ ४ ॥

प्रेम और प्रीति

॥ शब्द १ ॥

प्रीति की यह रीति बखानौ ॥ टेक ॥
कितनौ दुख सुख परै देंह पर, चरन कमल कर ध्यानौ ॥ १ ॥
हो चेतन्य बिचारि तजो भ्रम, खाँड़ धूरि जनि सानौ ॥ २ ॥
जैसे चात्रिक स्वाँति बुन्द बिनु, प्रान समरपन ठानौ ॥ ३ ॥
भीखा जेहिं तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहिं जानौ ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

कहा कोउ प्रेम बिसाहन[3] जाय ।
महँग बड़ा गथ[4] काम न आवै, सिर के मोल बिकाय ॥ १ ॥
तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय ।
तजि आपा आपुहिं है जीवै, निज अनन्य[5] सुखदाय ॥ २ ॥
यह केवल साधन को मत है, ज्यों गूँगे गुड़ खाय ।
जानहिं भले कहै सो कासों, दिल की दिलहिं रहाय ॥ ३ ॥
बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिन कर ताल बजाय ।
बिन सरवन धुनि सुनै बिबिधि बिधि, बिन रसना गुन गाय ॥ ४ ॥
निर्गुन में गुन क्योंकर कहियत, ब्यापकता समुदाय[6] ।
जहँ नाहीं तहँ सब कुछ दिखियत, अँधरन की कठिनाय ॥ ५ ॥
अजपा जाप अकथ को कथनो, अलख लखन किन पाय ।
भीखा अवगति की गति न्यारी, मन बुधि चित न समाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

जब छूटै मन उनमेखा[7] निरदोखा सो ॥ टेक ॥
जग जानत अउरा बउरा, तेहिं राग नहीं कहुँ दोषा, जन मोषा[8] सो ॥
वा कि गति बिपरीत सकल है, नर कपूत कर लेखा, अस जोखा सो ॥

(१) दीन । (२) नास्तिकता । (३) मोल लेना, खरीदना । (४) सोच समझ । (५) बे मिलौनी, केवल । (६) सब जगह । (७) उपद्रव । (८) मुक्ति ।

कहत सबै यह पेट लागि,[1] कला करत धरि भेषा, तन पोषा सो ॥
सो अपने साहब सों राजी, प्रेम भक्ति कै रेखा, बड़ जोखा सो ॥
हरि भक्तन अमृत फल चाख्यो, पाइ गयो कहुँ सेखा,[2] सुठि[3] चोखा सो ॥
भीखा तेहिं जन की का कहिये, जिन समभो अलख अलेखा, नहिं धोखा सो ॥

॥ शब्द ४ ॥

पिया मोर बैसल[4] माँझ अटारी, टरै नहिं टारी ॥ टेक ॥
काम क्रोध ममता परित्यागल, नहिं उन सहल जगत कै गारी ॥
सुखमन सेज सुंदर बर राजित, मिले हैं गुलाल भिखारी[5] ॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु अचरज बस्तु दिखाई, नैन सैन करि जुक्ति बताई ॥१॥
अबरन बरनन में नहिं आई, मरै जियै आवै नहिं जाई ॥२॥
सब्द त्रिगुन[6] कहि सके न सिराई, जहवाँ आपु निरंजनराई ॥३॥
सचर अचर जल थल जित देखा, केवल एक न दोसर भीखा ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

मैं कहूँ कौन जी हाल री, रूप अलख देखे बिना ॥ टेक ॥
जन्मत मरत अनेक बार तन, फिरि फिरि मारत काल री ॥
जात चलो दम दाम सबै कछु, नजरि न आवत माल री ॥
बिना मिलन अनमिल साहब सों, कर मींजत धुनि भाल[7] री ॥
थकित भयो मन बुद्धि जहाँ लगु, कठिन पर्‌यो उर साल री ॥
जम्यो[8] जुगति में गाछ[9] अनाहद, धुनि सुनि मिटि जंजाल री ॥
कली बैठि निज मूल सुरति पर, लखि जन होत निहाल री ॥
भीखा आतम फूल अजब, गुरु राम को नाम गुलाल री ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऐसो राम कवन बिधि जानी ।
दृष्टि मुष्टि कबहीं नहिं आवत, जनम मरन जुग बहुत सिरानी ॥

(१) पेट के निमित्त । (२) शेखु, गुरु । (३) सुन्दर । (४) बैठा । (५) माँगता अर्थात भीखाजी को । (६) बेद बचन । (७) सिर धुन कर । (८) उगा । (९) पेड़ ।

अगम अगोचर बसत निरंतर, जा के सीस न पाँव न पानी[1] ।
निर्गुन निर्बिकार सुखसागर, अपरम्पार अखंडित बानी ॥
ईसुर के केतहि[2] ईसुरता, साहब अविगत अकथ कथानी ।
अगह अकह अनभव अन मूरति, थाके सकल खोजि मुनि ज्ञानी ॥
अलख को लखे अदेख को देखे, ब्यापक पूरन चारिउ खानी ।
निरंकार निरुपाधि निरामय,[3] भीखा रंग न रूप निसानी ॥

॥ शब्द ४ ॥

कोउ लखि रूप सब्द सुनि आई ॥ टेक ॥
अविगत रूप अजायब बानी, ता छबि का कहि जाई ॥१॥
यह तौ सब्द गगन घहरानो, दामिनि चमक समाई ॥२॥
वह तौ नाद अनाहद निसदिन, परखत अलख सोहाई ॥३॥
यह तौ बादर उठत चहूँदिसि, दिवसहिं सूर छिपाई ॥४॥
वह तौ सुन्न निरंतर धुधुकत, निज आतम दरसाई ॥५॥
यह तौ झरतु है बँद झराझर, गरजि गरजि झरि लाई ॥६॥
वह तौ नूर जहूर बदन पर, हरदम तूर बजाई ॥७॥
यह तौ चारि मास को पाहुन, कबहुँ नाहिं थिरताई ॥८॥
वह तौ अचल अमर की जै जै, अनन्त लोक जस गाई ॥९॥
सतगुरु कृपा उभै[4] बर पायो. स्रवन दृष्टि सुखदाई ॥१०॥
भीखा सो है जन्म सँघाती, आवहि जाहि न भाई ॥११॥

॥ शब्द ५ ॥

ए हरि मीत बड़े तुम राजा ।
ब्यापक जहाँ तहाँ लगु तुम्हरे, हुकुम बिना कहुँ सरे न काजा ॥टेक॥
तिरगुन सूबा मौज बनाया, भिन्न भिन्न तहँ फौज रखाया ।
हय[5] गय[6] रथ सुखपाल बहूता, माया बढ़ी करै को कूता ।
कहत बने नहिं अनघड़ साजा, ए हरि मीत० ॥१॥
चारो दिसा कनात गड़ा है, असमान तंबू बिन चोब खड़ा है ।

---

(१) हाथ । (२) बहुत । (३) निर्माया । (४) दो । (५) घोड़ा । (६) हाथी ।

पानी अगिनि पवन है पायक, जो कछु काम सो करिबे लायक।
अनहद ढोल दमामा बाजा, ए हरि मीत० ॥२॥
तारागन पैदल समुदाई, अज्ञा ले जहँ तहँ चलि जाई।
चाँद सूर निस बासर आई, आवत जात मसाल दिखाई।
ध्रुव कियो थीर अचल मन धाजा[1], ए हरि मीत० ॥३॥
सहजादा है मन बुधि काला, कीन्हेव सकल जगत पैमाला।
काल बड़ा उमराव है भारी, डरे सकल जहँ लग तन धारी।
तुम्हरो दंड सकल सिर ताजा, ए हरि मीत ॥४॥
सत्त सतोगुन मंत्र दृढ़ावा, ज्ञान आदि दे पुत्र बुलावा।
अमल करहु तुम जग में जाई, फेरहु केवल राम दोहाई।
नाम प्रताप प्रकास को छाजा, ए हरि मीत० ॥५॥
चतुरंगिनि उज्जल दल देखा, जोग बिराग बिचार को लेखा।
छिमा सील संतोष को भाऊ, परमारथ स्वारथ नहिं चाऊ।
स्वारथ रत पर पारहु गाजा[2], ए हरि मीत० ॥६॥
रज गुन तम गुन कीन्ह्यो मेला, सबहीं भयो सतो गुन चेला।
हम तुम आइ कछू नहिं कीन्हा, अज्ञा ईस सीस पर लीन्हा।
मरत बहुत डर आपु की लाजा, ए हरि मीत० ॥७॥
पठयो काम क्रोध मद लोभा, जातें कीन्ह सकल तन छोभा।
केवल नाम भजै सो बाचै, नहिं तो और सकल मन काचै।
भीखा तुम बिन कौन निवाजा,[3] ए हरि मीत बड़े तुम राजा ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

बसु पुरुष पुरान अपारा, तब नहिं दूसर बिस्तारा ॥ टेक ॥
हफ्तमें[4] इच्छा अविगत बोले, सत्त सब्द निरधारा ॥ १ ॥
छठयें ओअं अनहद तुरिया, पँचयें अकासहिं भारा ॥ २ ॥
चौथे बायु सुन्न को मेला, तीजे तेज बिचारा ॥ ३ ॥

(१) ध्वजा। (२) जो स्वार्थी है उस पर बिजली गिराओ। (३) दया या पर्वरिश करना। (४) सातवाँ।

दूजे अप[1] बीजा पैदाइस, कीन्ह चहै संसारा ॥ ४ ॥
भीखा मूल प्रथी को भाजन[2], ता में ले सब धारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बोलता साहब लो लो लोई, मिथ्या जगत सत्य इक वोई ॥१॥
नाम खेत जन प्रीति कियारी, जीव बीज तापैर[3] पसारी ॥२॥
सेवा मन उनमुनी लगाया, लो लो जा जामलि[4] गुरदाया ॥३॥
जोग बढ़नि जल विषै दवाई, बिरही अंग जरद होइ आई ॥४॥
गगन गवन मन पवन झुराई, लोलो रंग परम सुखदाई ॥५॥
सुरति निरति कै मेला होई, नाद औ बिंद एक सम सोई ॥६॥
बाजत अनहद तूर अघाई, लोलो सुनत बहुत सुख पाई ॥७॥
अनुभव बालि[5] उदित उजियारा, आदि अंत मध एक निहारा ॥८॥
सुद्ध सरूप अलख लख पाई, लोलो दरसन की बलि जाई ॥९॥
पाप पुन्न गत[6] कर्म निनारा, केवल आतम राम अधारा ॥१०॥
भीखा जेहिं कारन जग आये, लोलो जन्म सुफल करि पाये ॥११॥

आरती

(१)

गुरु गोबिंद की करत आरती ॥ १ ॥
दिन दिन मंगल सद बिहारती ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति तन मनहिं गारती ॥ ३ ॥
जोग ध्यान दीपक सँवारती ॥ ४ ॥
बाती सुत सनेह बरि[7] डारती ॥ ५ ॥
सतगुरु बिरह अगिन उद्गारती[8] ॥ ६ ॥
पाप पुन्न सब करम जारती ॥ ७ ॥
भाव थार भक्ती सों धारती ॥ ८ ॥
अभि अंतर हरि नाम उचारती ॥ ९ ॥

---

(१) पानी। (२) बरतन। (३) छींटकर। (४) उगी, जमा। (५) बाल या फल। (६) रहित। (७) बट कर। (८) जगाती, बालती।

तजि बिषया रति चरन निहारती ॥१०॥
भीखा आरति सहज उतारती ॥११॥

(२)

हरि गुरु चरन किये परनाम । आरत जन पावहिं बिसराम ॥
सतगुरु किरपा हरि को नाम । भजन आरती आठो जाम ॥
सब्द प्रकास तिल के अस्थाम[1] । घट घट गुरु गोविंद को धाम ॥
ब्रह्म सरूप गोर नहिं स्याम । सुद्ध अकास नेर[2] नहिं लाम ॥
सतगुरु जुक्ति करायो ठाम । भीखा आला दृष्टि मुकाम ॥

(३)

नौबति ठाकुरद्वार बजावै । पाँचो सहित निरति करि गावै ॥
सतगुरु कृपा जाहि तेहि पासे । आरति करत मिलन की आसे ॥
ज्ञान दीप परकास सोहाती । दिव्य दृष्टि फेरत दिन राती ॥
जाचक सुरति निरति पहँ जावो । दान सरूप आतमा पावो ॥
भीखा एक दुइत का भयऊ । सर्प समाय रज्जु महँ गयऊ ॥

(४)

आरति बिनै करत हरि भक्ता । सुजस रैन दिन सोवत जगता ॥
चित चेतन्न ब्रह्म अनुरक्ता[3] । धुनि सुनि मगन जीव आसक्ता[4] ॥
सुद्ध सरूप नूर लखि लगता । नाम समुद्र लहरि महँ पगता ॥
बायें सो दहिने पछि सोइ अगता[5] । अर्ध उर्ध सम घटत न बढ़ता ॥
सतगुरु ज्ञान भक्ति को दाता । पावत भीख भिखा जोइ जाता ॥

बारह मासा

कोटि करै जो कोय, सतगुरु बिन प्रभु ना मिलैं ॥ टेक ॥
मास असाढ़ जन्म सुभ, बादर अलप सुभाव ।
करम भरम जल अंतर, प्रभु सों परल दुराव[6] ॥ १ ॥
सावन सहज सोहावन, गरजै औ घहराय ।
बुंद झलाझलि झलकै, हरि बिनु कछु न सोहाय ॥ २ ॥

(१) स्थान । (२) पास । (३) अनुराग से परिपूर्ण । (४) बिह्वल । (५) पीछे सोई आगे । (६) दूरी ।

भादों भवन भयकर, सुनि रैनी उतपात।
कहिं कहिं दमकै दामिनी, डरपत है बहु गात ॥ ३ ॥
मास कुवार अवधि दिन, बरखा बरखि सिराय।
नैन निमिख[1] नाहीं लगै, सिर धुनि धुनि पछिताय ॥ ४ ॥
कातिक मास उदासित, सुरति चललि परदेस।
निरति मिलन के कारन, कब धौं मिटहिं कलेस ॥ ५ ॥
अगहन मास जु ध्यान धन, खेती करत किसान।
नाम बीज लव लावै, बोवै सो लवै[2] निदान ॥ ६ ॥
पूस जु मास हवाल है, जाड़ जाड़ नियराय।
ओढ़न जब हरि मिलन को, आनँद प्रेम अघाय ॥ ७ ॥
माघ मास जु बसंत रितु, फुल्यो काया बन झारि।
सगुन सँजोग बिबिधि तन, मिलि है देव मुरारि ॥ ८ ॥
फागुन मास जु राग रँग, गुरु के बचन अस्थूल।
नाद बिंद इक सम भयो, जीव सीव करि मूल ॥ ९ ॥
चैत मास निर्मल तनै, द्रुम[3] नव पल्लव[4] लेत।
रूप अरुन[5] मृदु[6] सकल है, निज आतम छबि देत ॥१०॥
बैसाख मास फल पूरन, जोग जुक्ति प्रनयाम[7]।
दृष्टि उलटि कै लगि रहो, निसु दिन आठो जाम ॥११॥
जेठ बिषम तप भजन को, केवल ब्रह्म बिचार।
कह भीखा सोइ धन्न है, जेकर नाम अधार ॥१२॥

हिंडोलना

हिंडोला माया ब्रह्म को संग, नाम बोलता अंग ॥ टेक ॥
स्वारथ परमारथ दोऊ, गाड़ो खंभ बनाय।
निर्बिति औ परबिर्ति यहि बिधि, डोरि बाँधि बँधाय ॥ १ ॥
झूलहिं संत असंत दोउ, अज्ञ तज्ञ[8] बिचार।
ये झूलहिं बिषया रत, वे नाम के हितकार ॥ २ ॥

(१) छिन मात्र। (२) काटै। (३) पेड़। (४) पत्ती। (५) लाल। (६) कोमल। (७) प्राणायाम। (८) अज्ञान और ज्ञान।

ये झूलहिं काम क्रोध सँग, मोर तोर अघाय।
वे झूलहिं जोग जुक्ति से, मन ज्ञान ध्यान लगाय ॥ ३ ॥
ये झूलहिं सुत दारा सहित, मगन बारम्बार।
वे झूलहिं सुद्ध सरूप सँग, दिन दिन रँग उजियार ॥ ४ ॥
ये झूलहिं जग जंजाल डूबे, फिकिरि उद्दम लाय।
वे झूलहिं द्वैत मिटाय यहि बिधि, छीर नीर बिलगाय ॥ ५ ॥
ये झूलहिं प्रन औ पच्छ लिहे, जाति कुल ब्यौहार।
वे झूलहिं अबरन बरन तजि, सतगुरु चरन आधार ॥ ६ ॥
ये झूलहिं कोट झराय खंदक, सराजाम सँवारि।
वे झूलहिं इन्द्री करत निग्रह, सुरति निरति सँभारि ॥ ७ ॥
ये झूलहिं सब हथियार हय गय,[1] लोग बाग तुमार[2]।
वे झूलहिं प्रान अपान इक है, नाद के झनकार ॥ ८ ॥
ये झूलहिं पूत सपूत के सँग, मान बड़ाई जोहि।
वे झूलहिं आतम राम मिलि कै, छोट सब से होहि ॥ ९ ॥
ये झूलहिं पाप औ पुन्न फिरि फिरि, मरन धरि औतार।
वे झूलहिं भीखा त्यागि तन को, आपु मिलि करतार ॥१०॥

(२)

सतगुरु नावल सब्द हिंडोलवा, सुनतहिं मन अनुरागल ॥१॥
झूलत गुनत रुचित भावल, जियरा चकित उठि जागल ॥२॥
करम भरम सब त्यागल, कपट कुचालि मन भागल ॥३॥
झूलत चेतन चित लागल, अनहद धुनि मन रातल ॥४॥
भीखा जो याहि मत मातल, पासा दाँव पायो तिन माँगल ॥५॥

(३)

आदि मूल इक रुखवा[3] ता में तिनि[4] डार।
ता बिच इक अस्थूल है साखा बहु बिस्तार ॥ १ ॥
अबरन बरन न आवही छाया अपरम्पार।
माया मोह ब्यापक भयो झूले वार न पार ॥ २ ॥

---

(१) घोड़ा हाथी। (२) तूमार, फैलाव। (३) पेड़। (४) तीन।

सतगुरु नावल हिंडोलवा सुरति निरति गहि सार।
झूलहिं पाँच सोहागिनि गावहिं मंगलचार ॥ ३ ॥
पौढ़्यो अगम हिंडोलवा सत्त सब्द निर्धार।
झुलत झुलत सुख ऊपजै केवल ब्रह्म बिचार ॥ ४ ॥
अब की बार यह औसर मिलै न बारम्बार।
फिर पाछे पछिताइबो देंह छुटे बेकार ॥ ५ ॥
जोग जुक्ति के हिंडोलवा अनहद झनकार।
जो यहि झुलहि हिंडोलवा ताहि मिलहि करतार ॥ ६ ॥
आवा गवन निवारहू फिरि न होय औतार।
साधु सँगति को मेला झूलहिं नाम अधार ॥ ७ ॥
डार पात फल पेड़ में देख्यो सकल अकार।
भीखा दूसर गति भयो सुद्ध सरूप हमार ॥ ८ ॥

(४)

जोग जुक्ति कै हिंडोलवा गुरु सहज लखावल ॥ १ ॥
चाँदै राखि सूर पोढ़ावल[1] पवन डोरि धै पावल ॥ २ ॥
अधं उर्ध मुख पावल पुलकि पुलकि[2] छवि भावल ॥ ३ ॥
गगन मगन गुन गावल सुरति निरति में समावल ॥ ४ ॥
भीखा यहि बिधि मन लावल आतम दरसावल ॥ ५ ॥

॥ बसंत ॥

(१)

जब गुरु दयाल तब सत बसंत। यहि सिवाय मत है अनंत ॥
श्री पंचमी है पाँच नारि। सम गावहिं इक सुर धमारि ॥
धुनि अकास भरि रहलि छाय। सुनत मगन उर नहिं समाय ॥
धन्न भाग जा के यह सँजोग। मिल्यौ पदारथ अनँद भोग ॥
जीव बसायो ब्रह्म अंस। बकुला तें भयो परमहंस ॥
माघ मकर तन सुफल जानि। मिल्यौ पदारथ नाम खानि ॥

---

(१) बाईं स्वाँसा रोक कर दाहिनी चलाई। (२) मगन होकर।

नाद बिंद को जूह[१] होय। वे साहब ये सेवक जोय ॥
सुन्न मँडल घर भयो भोर। सुद्ध सरूप चंद चित चकोर ॥
भीखा मन मुक्ता चुगत आग। गुरु गुलाल जी के चरन लाग ॥

(२)

खेलत बसंत रुचि अलख राय। रहनि निरंतर समय पाय ॥
नाम बीज फैलाव कीन्ह। जगत खेत भरि पबरि[२] दीन्ह ॥
जाम्यौ आँक[३] अकार नेह। दिन दिन बढ़त करम सँदेह ॥
पेड़ एक लगे तीन डार। ऊपर साखा बहु तुमार ॥
कली बैठि गुरु ज्ञान मूल। बिगसि बदन फूलो अजब फूल ॥
फल प्रापत भयो रितु नसाय। परम जोति निज मन समाय ॥
पक्क भयो रस असी खानि। चाखत दृष्टि सरूप जानि ॥
सोई आदि मध अंत सोइ। जीव पवन मन रह्यो न कोइ ॥
सब्द ब्रह्म भयो सुन्न लीन। भीखा राति न तहवाँ दीन[५] ॥

(३)

चेतत बसंत मन चित चेतन्य। जोग जुगति गुर ज्ञान धन्य ॥
उरध पधार्‌यो पवन घोर। दृष्टि पलान्यो[६] पुरुब ओर ॥
उलटि गयो थकि मिटलि दाह[७]। पच्छिम दिसि के खुललि राह ॥
सुन्न मंडल में बैठु जाय। उदित उजल छबि सहज पाय ॥
जोति जगामग झरत नूर। ह्वाँ निसु दिन नौबति बजत तूर ॥
झलक झनक जिव एक होय। मत प्रान अपान को मिलन सोय ॥
रूह अलख नभ फूल्यो फूल। सोइ केवल आतम राम मूल ॥
देखत चकित अचर्ज आहि। जा वह सो यह कहौं काहि ॥
भीखा निज पहिचान लीन्ह। वह साबिक[८] ब्रह्म सरूप चीन्ह ॥

॥ होली ॥

(१)

होरी सो खेलै जा के सतगुरु ज्ञान बिचार।
याह सिवाइ जो और करतु है, ता को जन्म खुवार ॥ १ ॥

---

(१) समूह। (२) पबारना, छींटना। (३) अंकुर। (४) तूमार, फैलाव। (५) दिन। (६) तैयार किया, कसा। (७) तपन। (८) प्राचीन।

इँगल पिंगल है सुन्न भेंटानो, सुखमन भयो उँजियार ।
नूर जहूर बदन पर झलकत, बरखत अधर अधार ॥ २ ॥
बाजत अनहद घंटा तहँ धुनि, अबिगत सब्द अपार ।
पुलकि पुलकि मन अनुभव गावत, पावत अलख दिदार ॥ ३ ॥
अजर अबीर कुमकुमा केसरि, उमगो प्रेम पोखार[1] ।
राम नाम रस रंग भयो, गत काम क्रोध हङ्कार ॥ ४ ॥
ब्यापक पूरन अगम अगोचर, निज साहब बिस्तार ।
भीखा बोलत एक सभन में, है जग सकल हमार ॥ ५ ॥

(२)

जग नाम प्रकास अकार धरत जड़, आतम राम खेले होरी ।
काम क्रोध मद लोभ ग्रसित नर, आपु तें आपु नरक बोरी ॥१॥
तजि बिषया रत भक्ति भाव जहँ, ज्ञान ध्यान रस रँग घोरी ।
संत सभा चोआ अरु कुमकुम, प्रेम बचन छिरकत होरी ॥२॥
सतगुरु हाथ बिकाय लियो, प्रभु दान दियो बन्धन छोरी ।
जोग जुक्ति अभ्यास भर्यो, लै अर्ध उर्ध सुखमन झोरी ॥३॥
सुरति निरति लव लीन भयो, सम जीव सीव[2] दोनों जोरी ।
ब्रह्म सरूप अनूप दृष्टि भरि, निज प्रति देखि मिलो गोरी ॥४॥
अगम अगोचर रूप झलाझलि, सोहं तार लगोरी ।
कहैं भीखा मेरो ऐसो साहब, मन माया अँखुवा[3] तोरी ॥५॥

(३)

ए हो होरी गाई, मधुर मधुर सुर राग चढ़ाई ॥ टेक ॥
समय सोहावन देखत मानो, गयो बसंत फाग रितु आई ॥
तन मन धन चरनन पर वारो, नाम प्रताप गगन धुनि छाई ॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है, सुरति निरति मिलि रास बनाई ॥
हौं[4] तो सरनागत माँगत हौं, अब दीजे प्रभु संत दोहाई ॥
जल थल जीव जहाँ लगि देखौ, मन को बोध नहीं ठहराई ॥

(१) हौज़ । (२) जिसकी सेवा करता है, स्वामी । (३) अंकुर । (४) मैं ।

काया गढ़ के गगन भवन में, धुधुकि धुधुकि धुन नाम सुनाई ॥६॥
भीखा को मन भ्रमत देखि कै, गुरु गुलाल जो पंथ चढ़ाई ॥७॥

(४)

इक पुरुष पुरान चहूँ जुग में, मिलि आतम राम खेलै होरी।
रंग लगो फगुवा रस बसि, भयो माया ब्रह्म दुनों जोरी ॥१॥
जग परिपंच करम अरुझे नर, सबै कहत मोरी मोरी।
नाम पदारथ भूलि गयो, गल फाँस परी भ्रम की डोरी ॥२॥
कोउ जोग जुक्ति रस भेद पाइ के, सुरति निरति लै रँग बोरी।
बाजत अनहद ताल पखावज, उमग्यो प्रेम अनन[1] खोरी[2] ॥३॥
सतगुरु सब्द अबीर कुमकुमा, भाव भरचौ झोरी झोरी।
भीखा दिब्य दृष्टि करि छिरकत, पलकन नूर चुवत ओरी[3] ॥४॥

(५)

मन में आनँद फाग उठो री ॥ टेक ॥
इँगला पिंगला तारी देवै, सुखमन गावत होरी ॥ १ ॥
बाजत अनहद डंक[4] तहाँ धुनि, गगन में ताल परो री ॥ २ ॥
सतसंगति चोवा अबीर करि, दृष्टि रूप लै घोरी ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल जी रंग चढ़ायो, भीखा नूर भरो री ॥ ४ ॥

(६)

होरी खेलन जाइये, सत सुकरित साथ लगाई।
यहि माया परपंच फागु में, मति कोइ परे भुलाई ॥१॥
सतगुरु ज्ञान अबीर रंग लै, हद भरि दमहिं चलाई।
पाँच पचीस सखी जह चाचरि, गावहिं अनहद डंक बजाई ॥२॥
सुनत मगन मन पवन लसित भयो, सुरति निरति अरुझाई।
इँगल पिंगल पिचुकारी छोड़हिं, सुखमन रंग भिंजाई ॥३॥
ब्रह्म सरूप चेतन्न नीर लै, दुरमति मैल बहाई।
भीखा ता छबि कहहि कौन मुख, एकौ जुक्ति न आई ॥४॥

(१) एक ही का जिस में दूसरे की गुञ्जाइश नहीं है। (२) गली। (३) ओलती, पानी की धार जो छत से गिरती है। (४) डंका।

(७)

आनन्द उठत झकोरी फगुवा, आनन्द उठत झकोरी ॥टेक॥
अनहद ताल पखावज बाजै, मनमत राग मरोरी ॥ १ ॥
काया नगर में होरी खेल्यो, उलटि गयो तेहिं खोरी ॥ २ ॥
नैनन नर रंग उमग्यौ, चुअत रहत निज ओरी ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल जी दाया कीन्ही, भीखा चरन लगी री ॥४॥

(८)

हरि नाम भजन हठ कीजै हो, स्वाँसा ढरकत रंग भरी ।
हो होइ समय जात मानो गनि गनि, सिर पर ठोकत काल घरी ।टेक
फगुवा जग भकुवा खेलतु है, स्वारथ रत होरी परी ।
परमातम चेतन्न आतमा आइ सरूप गयो छरी[1] ॥१॥
कहत है बेद बेदांत संत को, साँच भक्ति बिनु भव तरी ।
परमारथ गुरु ज्ञान अनादर, लोक लाज कुल को डरी ॥२॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, तन पर आय चढ़ी जरी ।
बात कफ्फ पित कंठ गहो है, नैनन नीर लगो झरी ॥३॥
बिसर्‍यो गथ[2] अब सान बुझावत, जहँ जहँ बस्तु रही धरी ।
हाहाकार करत घर पुर जन, थकित भयो का कहि करी ॥४॥
चतुर प्रबीन बैद कोउ आवो, हाथ उठा देखो नरी[3] ।
भीखा बूझत कहत सबै अब, राम कृस्न बोलो हरी ॥५॥

(९)

जा के केवल नाम अधार होरी रंग भरी ।
दुबिधा भाव पखंड तजो है सतगुरू बचन अधार ।
यहि बिधि सुद्धि करी ॥ १ ॥
तन मन वारि चरन पर दीन्हो पवन जोर बरियार ।
जोग जुक्ति अवराध कठिन सुठि निपट खरग के धार ।
सनमुख लरी मरी ॥ २ ॥

---

(१) छल जाना । (२) बोल । (३) नाड़ी ।

सुन्न रैन बिच भोर भयो उठि चेतन करत बिचार।
प्रेम पदारथ प्रगट भयो जब ज्ञान अगिन धधकार।
देखत जरी बरी ॥ ३ ॥
आतम राम अखंडित पूरन ब्रह्म सरूप अकार।
भीखा भाग कहाँ लगि बरनों जाहि मिले करतार।
धन्य सोई घरी ॥ ४ ॥

(१०)

धनि फाग खेलन सो जाय, निज पिया पाइ कै।
नाहीं तौ बैठि तेवान[1] करै, वह रंग करम दुखदाय।
लावो न भुलाइ कै ॥ १ ॥
भरम भयंकर वार पार नहिं, कर मींजत पछिताय।
हर दम उठत मरोर हिये, जनु कहे कोउ पिय तुम आय।
धरो पगु धाइ कै ॥ २ ॥
यहि अंतर सुपना निसु बातो, सोहं आपु जनाय।
बूझत अरथ बिचार यहै सखि, आपा पति अपनाय।
मिलो मुसकाइ कै ॥ ३ ॥
सतगुर धन्य जो कह्यो अगुवने, सो अब कृपा जनाय।
भीखा अलख को लखो कहा, वहँ मन बुधि चित न समाय।
गावो का बजाइ कै ॥ ४ ॥

॥ कबित्त ॥

(१)

कोउ जजन[2] जपन कोउ तीरथ रटन[3],
ब्रत कोउ बन खंड कोउ दूध को अधार है।
कोउ धूम पानि[4] तप कोउ जल सैन लेवै,
कोउ मेघडम्बरी[5] सो लिये सिर भार है ॥

(१) फिकर। (२) यज्ञ। (३) घूमना। (४) धुवाँ पीना अर्थात गाँजा पीना। (५) बड़ा छाता।

कोउ बाँह को उठाय ढढ़ेसुरी कहाइ जाय,
कोउ तो मवन[१] कोउ नगन[२] बिचार है।
कोउ गुफाही में वास मन मोच्छही की आस,
सब भीखा सत्त सोई जा के नाम को अधार है।

(२)

कोउ प्रानायाम जोग कोउ गुन गावे लोग,
कोउ मानसिक पूजा करे चित चेतना।
कोउ गीता भागवत कोउ रामायन मन,
कोउ होम यज्ञ करे बिधि बेद कहे जेतना॥
कोउ ग्रहन में दान कोउ गंगा अस्नान,
कोउ कासी ब्रह्मनाल[३] वे फलही के हेतना[४]।
भीखा ब्रह्म-रूप निज आत्मा अनूप,
जो न खुल्यो दिब्य दृष्टि खाली कियो भ्रम एतना॥

(३)

राम नाम जाने बिना बृथा है सकल काम,
जैसे नटिनी को नाट[५] पेखनी को पेखना[६]।
गुरु जी से ज्ञान लेवे चरनों में चित्त देवे,
मानुष की देही येही जीवन को लेखना॥
ताखी[७] औ तिलक भाल सेल्ही औ तूमर[८] माल।
मोर पच्छ पच्छ बाद सुद्ध रूप भेखना।
भीखा दिब्य दृष्टि आपु। जपत अजपा जाप,
आपुही को आपु सो तो आपुही में देखना॥

(४)

पुरुष पुरान आदि दूसरो न माया बादि,
बोले सत्त सब्द जा में त्रिगुन पसार है।

---

(१) चुप। (२) नंगे। (३) काशी में एक स्थान का नाम। (४) अभिप्राय से। (५) चरित्र। (६) देखने भर का खेल है। (७) साधुवों की नोकदार टोपी। (८) तुम्बा।

बीज बढ़ो है तुमार[1] चर अचर बिचार,
ता में मानुष सचेत औ चेतन अधिकार है ॥
सतगुरु मत पाय निज रूप ध्यान लाय,
जनम सुफल साँच ता को अवतार है ।
गगन गवन करै अनहद नाद भरै,
सुन्दर सरूप भीखा नूर उँजियार है ॥

(५)

जा के ब्रह्म दृष्टि खुलो तन मन प्रान तुलो,
धन्य सोई संत जा के नाम की उपासना ।
ज्ञानिन में ज्ञान वोई अनुभव फल जोई,
तजै लोक लाज जा में काल जाल साँसना ॥
प्रेम पंथ पग दियो उरध में घर कियो,
मन निर्गुन पद छुटै जग बासना ।
जोग की जुगति पाय सुरति निरति लाय,
नाद बिंद सम भीखा लायो दृढ़ आसना[2] ॥

(६)

आदि अंत मध्य एक नाद बिंद सम पेख,
सब घट सुद्ध ब्रह्म दीखत ज्यों अकास है ।
काहे को भरम करै जनमि जनमि मरै,
भजत न हठ करि जो लों तन साँस है ॥
निज सुख येही जानो दुबिधा न भाव आनो,
अलख अलेख देखो आपु हीमें बास है ।
चित्त ज्यों चकोर लेवै चंद्रमा को दृष्टि देवै,
आतमा प्रकासी ज्ञान भीखा निज पास है ।

(७)

ज्ञान अनुमान करि चीन्ह ले अमान धरि,
गुरु परताप खुलो भरम कपाट है ।

---

(१) बहुत । (२) आसन ।

चाँद सूर एक सम सुरति मिलाय दम,
इँगल पिंगल रँग सुखमन माट है।
पूरब पवन जोग पच्छिम की राह होय,
गंग जमुन संगम तहँ त्रिकुटी को घाट है।
प्रान औ अपान असमान ही में थिर होवे,
भीखा सब्द ब्रह्म को अकास सुन्न हाट[१] है॥

(८)

भूलो हाट ब्रह्म द्वार काम क्रोध अहंकार माहिं,
रहत अचेत नर मन माया पागो है।
अलख अलेख रूप आतमा है भेख धरे,
कस न पुलकि[२] जीव ताही पंथ लागो है॥
अकथ अगाध वोई अनुभव फल जोई,
निसु महा भोर मानो सोय उठि जागो है।
बाजै अनहद मारू उभै दल मोच्छ झारू,
सूरा खेत माँड़ि रही भीखा क्रूर[३] भागो है॥

(९)

क्रूर है खजूर छाया संचै[४] पु[५] झूँठी माया,
ग्रसइ रहत यह जगत का हाल है।
मन परतीत करै सत औ संतोष धरै,
नाम जपै हर दम दमहिं को माल है॥
साधन को संग जहाँ नाना परसंग तहाँ,
अर्थ नवीन सुनि जागो भाग भाल[६] है।
धन्य आपु भेद पाय दीन्हो और को बताय,
भीखा गुरु जीव राम नाम तो गुलाल है॥

(१०)

बालक सों भयो ज्वान दारा सुत ध्यान प्रान,
समय गये तें फल लागो भूख रूख है।

(१) बाजार। (२) उमंग से। (३) कादर। (४) रक्षा करता है। (५) शरीर। (६) माथा।

करम धरम जप तीरथ रटत[१] तप,
राम नाम जाने बिना कन[२] तुख[३] खूख[४] है ॥
बिषै बिभव बिलास तूल बड़ा आस पास,
सत औ संतोष नासिं सबै सुख दुक्ख है।
जगत समुद्र माहिं नर तन नाव परी,
भीखा कनहरि[५] गुरु पार मुक्ख मुक्ख है ॥

(११)

राम जी सों नेह नाहीं सदा अबिबेक माहीं,
मनुवाँ रहत नित करत गलगौज[६] है।
ज्ञान औ बैराग हीन जीवन सदा मलान,
आत्मा प्रगट आपु जानि ले भा नौज है ॥
साहब सों कौल छूटो काम क्रोध लोभ लूटी,
जानि के बँधायो मीठो बिषै माया फौज है।
साहब की मौज जहाँ भीखा कीन्ह मौज तहाँ,
साहब की मौज जोई सोई मौज मौज है ॥

(१२)

खुद एक भुम्मि[७] आहि बासन[८] अनेक ताहि,
रचना विचित्र रंग गढ़यो कुम्हार है।
नाम एक सोन आस[८] गहना है द्वैत भास,
कहूँ खरा खोंट रूप हेमहि[९] अधार है।
फेन बुदबुद अरु लहरि तरंग बहु,
एक जल जानि लीजे मीठा कहूँ खार है ॥
आत्मा त्यों एक जाते[१०] भीखा कहे याहि मते,
ठग सरकार के बटोही[११] सरकार के ॥

---

(१) घूमता है। (२) छाँटन। (३) भूसी। (४) छूछो। (५) पतवार पकड़ने वाला। (६) हल्ला। (६) मिट्टी। (७) बरतन। (८) अस। (९) सोना। (१०) एक ही जाति की। (११) मुसाफिर।

(१३)

एक नाम सुखदाई दूजो है मलिनताई,
जिव चाहहु भलाई तो पै राम नाम जपना ॥
तात मात सुत बाम[1] लोग बाग धन धाम,
साँच नाहीं झूँठ मानी रैनि कै सुपना ॥
माया परपंच येहि करम कुटिल जेहि,
जनम मरन फल पाप पुन्न तपना ।
बोलता है आप ओई जेते औतार कोई,
भीखा सुद्ध रूप सोई देखु निज अपना ॥

(१४)

निरमल हरि को नाम सजीवन,
धन सो जन जिन के उर फरेऊ ।
जस निरधन धन पाइ संचतु है,
करि निग्रह किरपिनि मति धरेऊ ॥
जल बिनु मीन फनी[2] मनि निरखत,
एको घरी पलक नहिं टरेऊ ।
भीखा गुँग औ गूड़ को लेखा,
पर कछु कहे बने ना परेऊ ॥

(१५)

गये चारि सनकादि पिता[3] लोक आदि धाम,
किये परनाम भाव भगति दृढ़ायऊ ।
पूँछ्यो हँसि प्रीति भाव माया ब्रह्म बिलगाव,
बिधि जग ब्यौहारी प्रति उत्तर न आयऊ ॥
कियो बहुत समास भयो अरथ न भास,
हरि हरि सुमिरन ध्यान आरत सुनायऊ ॥
प्रभु हस तन लियो द्विज दरसन दियो,
भीखा अज[4] सनकादि कर जोरि माथ नायऊ ॥

(१) स्त्री । (२) साँप । (३) ब्रह्मा । (४) ब्रह्मा ।

॥ रेखता ॥

(१)

पाप औ पुन्न नर झूलत हींडोलना,
ऊँच अरु नीच सब देह धारी।
पाँच अरु तीन पच्चीस के बस परो,
राम को नाम सहजै बिसारी ॥
महा कवलेस[1] दुख वार अरु पार नहिं,
मारि जम दूत दें त्रास भारी।
मन तोहिं धिरकार धिरकार है तोहिं,
धृग बिना हरि भजन जीवत भिखारी ॥

(२)

करो बीचार निर्धार[2] अवराधिये[3],
सहज समाधि मन लाव भाई।
जब जक्त की आस तें होहु निरास,
तब मोच्छ दरबार की खबरि पाई ॥
न तो भर्म अरु कर्म बिच भोग भटकन लग्यो,
जरा अरु मरन तन बृथा जाई ॥
भीखा मानै नहीं कोटि उपदेस सठ,
थक्यो बेदांत जुग चारि गाई ॥

(३)

भयो अचेत नर चित्त चिंता लग्यो,
काम अरु क्रोध मद लोभ राते।
सकल परपंच में खूब फाजिल हुआ,
माया मद चाखि मन मगन माते।
बढ़्यो दीमाग मगरूर हय गज[4] चढ़ा,
कह्यो नहिं फौज तूमार[5] जाते।

(१) क्लेश, कष्ट। (२) निरंतर। (३) आराधना करो। (४) घोड़ा हाथी। (५) गिनती, बिस्तार।

भीखा यह ख्वाब की लहरि जग जानिये,
जागि करि देखु सब झूँठ नाते ॥

(४)

झूँठ में साँच इक बोलता ब्रह्म है,
ताहि को भेद सतसंग पावे ।
धन्य सो भाग जो सरन सेवा टहल,
रात दिन प्रीति लवलीन लावे ॥
बचन लै जुक्ति सों सिद्धि आसन करै,
पवन सँग गवन करि गगन जावै ।
प्रगट परभाव गुरु गम्य परचो इहै,
भीखा अनहद्द पहिले सुनावे ॥

(५)

दूजे वह अमल दस्तूर दिन दिन बढ़्यो,
घटा अँधियार उँजियार भाया ।
अर्ध से उर्ध भरि जाप अजपा जप्यो,
चाँद अरु सूर मिलि त्रिकुटि आया ॥
झरत जहँ नूर जहूर असमान लौं,
रूह अफताब[1] गुरु कीन्ह दाया ।
भीखा यह सत्त सो ध्यान परवान है,
सुन्न धुनि जोति परकास छाया ॥

(६)

सब्द परकास के सुनत अरु देखते,
छूटि गइ बिषै बुधि बास काँची ।
सुरति गै निरति घर रूप अयो[2] दृष्टि पर,
प्रेम की रेख परतीत साँची ॥
आतमा राम भरिपूर परगट रह्यो,
खुलि गई ग्रंथि[3] निज नाम बाँची ।

(१) सूरज । (२) आयो । (३) गाँठ ।

भीखा यों पगि गयो जीव सोइ ब्रह्म में,
सीव अरु सक्ति की मिलन साँची।

(७)

सकल बेकार की खानि यह देहि है,
मल्ल दुर्गंध तेहि भरो माहीं।
मन अरु पवन यह जोर दोनों बड़े,
इन को जीत कै पार जाहीं ॥
जाहि गुरु ज्ञान अनुमान अनुभव करै,
भयो आपु आप मिलि नाम पाहीं।
भीखा आधार आपार अद्वैत है,
समुँद अरु बुंद कोइ और नाहीं ॥

(८)

जहाँ तक समुँद दरियाव जल कूप है,
लहरि अरु बुंद को एक पानी।
एक सूबर्न[1] को भयो गहना बहुत,
देखु बीचार सब हेम खानी[2] ॥
पिरथवी आदि घट रच्यो रचना बहुत,
मिर्तिका[3] एक खद भूमि जानी।
भीखा इक आतमा रूप बहुतै भयो,
बोलता ब्रह्म चीन्है सो ज्ञानी ॥

(९)

ब्रह्म भरि पूर चहुँ ओर दसहूँ दिसा,
भाव आकासवत नाम गहना।
अजर सो अमर आवरन अबिगति सदा,
आतमा राम निज रूप लहना ॥
सत्त सों एक अवलँब करु आपनो,
तजो बकवाद बहु फुहस[4] कहना।

---

(१) सोना। (२) सब कीं निकासी सोना से है। (३) मिट्टी। (४) झूठो या फूहर बात।

भीखा अलेख को देखि कै मिलि रहो,
मुष्टिका[1] बाँधि चुप लाइ रहना ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

अगह तुम्हरो न गहना है। अकह तुम कहा कहना है ॥१॥
सब्द अरु ब्रह्म अधिकारी। चेतन तुम रूप तन धारी ॥२॥
अबिगति तुम्हरी न गति पावै। कहाँ अस ज्ञान बुधि आवै ॥३॥
तुम्हरो कहिं वार नहिं पारा। केतो अनुमान करि हारा ॥४॥
अगम का गम कवन पावे। जहाँ नहिं चित्त मन जावे ॥५॥
प्रगट तुम गुप्त सब माहीं। बियापक तुम कहाँ नाहीं ॥६॥
सुनहु सब की कहहु सब से। देखहु सब को मिलो तन से ॥७॥
जहाँ लगि सकल हो तुमहीं। धोख यह बीच हम हमहीं ॥८॥
छुटै जब तैं व मैं मेरा। तहाँ ठाकुर न कोउ चेरा ॥९॥
सेवल सोइ आपु आपै हो। दुइत सोइ जाय जापै हो ॥१०॥
उभै[2] हम एक हो तुम हीं। हमैं तुम्हैं भेद कम कमहीं ॥११॥
भीखा तजो भरम के ताईं। चीन्हो निज आपनो साईं ॥१२॥

॥ शब्द २ ॥

रखो मोहिं आपनी छाया। लगै नहिं रावरी माया ॥१॥
कृपा अब कीजिये देवा। करौं तुम चरन की सेवा ॥२॥
आसिक तुझ खोजता हारे। मिलहु मासूक आ प्यारे ॥३॥
कहौं का भाग मैं अपना। देहु जब अजप का जपना ॥४॥
अलख तुम्हरो न लख पाई। दया करि देहु बतलाई ॥५॥
वारि वारि जावँ प्रभु तेरी। खबरि कछु लीजिये मेरी ॥६॥
सरन में आय मैं गीरा। जानो तुम सकल पर[3] पीरा ॥७॥

---

(१) मुट्ठी। (२) दो। (३) पराई।

अंतरजामी सकल डेरो[1]। छिपो नहिं कछु करम मेरो ॥८॥
अजब साहब तेरी इच्छा। करो कछु प्रेम की सिच्छा ॥९॥
सकल घट एक हो आपै। दुसर जो कहै मुख कापै ॥१०॥
निर्गुन तुम आप गुन धारी। अचर चर सकल नर नारी ॥११॥
जानों नहिं देव मैं दूजा। भीखा इक आतमा पूजा ॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

भजन साईं का कर तू खूब, नहीं तौ काल मारेगा ॥१॥
जुक्ति गुरु ज्ञान है अजूब, लखत दिल दौरि[1] हारेगा ॥२॥
तुझी में आपु है मुहबूब, सोई आप और तारेगा ॥३॥
अनाहद बाजता है झूम, सुनत मन पवन धारेगा ॥४॥
समाधी सहज लावो तुम, परम पद को सिधारेगा ॥५॥
काम अरु क्रोध करते धूम, बिना प्रभु को उबारेगा ॥६॥
रमिता रमी एकबहु भूमि, भीखा आतम बिचारेगा ॥७॥

॥ शब्द ४ ॥

जानो इक नाम को भाई, और का कौन लेखा है ॥१॥
दृष्टि का भेद नहि पाई, कहो केहि ताहि देखा है ॥२॥
सुभग तन मानुखा जाई, भजो दिन जेइ सेषा है ॥३॥
गुरू जब भेद बतलाई, सोई जन आपु पेखा है ॥४॥
सब्द अरु ब्रह्म सुखदाई, सकल घट नाम लेखा है ॥५॥
निर्गुन औ सगुन समताई, सोई जग रूप भेषा है ॥६॥
अलख का लखन मेकठिनाई, करम को मार खा है ॥७॥
कपट मन आस दुखदाई, लिखा भीखा जो रेखा है ॥८॥

॥ शब्द ५ ॥

सत्य गहै इक नाम को सोइ संत सयाने।
मन क्रम वचन बिचारि के दूजो नहिं जाने ॥ १ ॥

---

(१) घट घट में ब्यापक। (२) दौड़ कर।

जोग जुक्ति गुरु ज्ञान में जिन चित अरुझाने।
पाप अरु पुन्य करम कहा सुभ असुभ हिराने[1] ॥ २ ॥
अगम अगोचर रूप है फल आनि तुलाने।
प्रेम सुधा रस भावनो जन चाखि लुभाने ॥ ३ ॥
सब्द प्रकास सहज भयो चित चकित भुलाने।
भीखा सुनि तिन देखेऊ बिन आँखिहिं काने ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

काह भये गुरुमुख भये, दिल साँच न आया।
काम क्रोध के बसि परे झूँठी मन माया ॥ १ ॥
अपनी कपट कुचाल तें, नाना दुख पावै।
करम भरम डर बीच में सिंह स्यार कहावै ॥ २ ॥
अमृत तजि बिष खातु है, ताको का कीजै।
निज दाँतन रसना कटै, दोस केहि दीजै ॥ ३ ॥
ज्ञान हीन औगति भयो, मरि नरकहिं जाई।
ता में चित चेतन करै, केहि कामै आई ॥ ४ ॥
लौंड़ी पूछै पिया हीं, कहि भेद सुनाया।
सिर के साँटे[2] करार कियो, खोजि ताहि लै आया ॥ ५ ॥
साहब अलख अलेख है, गति लखहि न कोई।
भीखा निस्चै राम की, इच्छा से होई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सो हरि जन जो हरि गुन गैनो।
मन क्रम बचन तहाँ लै लावै, गुरु गोबिंद को पैनो ॥ १ ॥
ता पर होहिं दयाल महा प्रभु, जुक्ति बतावैं सैनो ॥ २ ॥
बूझि बिचारि समझि ठहरावत, तुरत भयो चित चैनो ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ पखेरू, टूटि जात तब डैनो[3] ॥ ४ ॥

(१) खो गये। (२) बदले। (३) पर।

आतम राम अभ्यास लखन करि, जब लेवे निज ऐनो[1] ॥५॥
ब्रह्म सरूप अनूप की सोभा, नहिं कहि आवत बैनी[2] ।
भीखा गुरु गुलाल सिर ऊपर, देखत है बिनु नैनो ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

देखो प्रभु मन कर अजगूता[3] ॥ टेक ॥
राम को नाम सुधा सम छोड़त बिषया रस लै सूता ॥१॥
जैसे प्रीति किसान खेत सों दारा धन औ पूता ॥२॥
ऐसी गति जो प्रभु पद लावै सोई परम अवधूता ॥३॥
सोई जोग जोगेसुर कहिये जा हिये हरि हरि हूता[4] ॥४॥
भीखा नीच ऊँच पद चाहत मिलै कवन करतूता ॥५॥

॥ शब्द ९ ॥

मन मोर बड़ अवरेबिया[5] ।
हरि भजि सुख नहिं लेत, मन मोर बड़ अवरेबिया ॥टेक॥
दिब्य दृष्टि नहिं रूप निरेखत, नूर देत बहु जेबिया[6] ॥१॥
सतगुरु खेत जोति लै बोवल, भीखा जम लियो हिसबिया ॥२॥

॥ शब्द १० ॥

राम नाम भजि लीजै भाई ॥ टेक ॥
देखु बिचारि दूसर कोउ नाहीं, हितु अपनो हरि कीजै जाई ।
जग परपंच सकल भ्रम जानो, नाम रंग भींजै सुखदाई ॥१॥
संतन हाट बिकाय बस्तु सो, नाम अमोल लीजै अनकाई[7] ।
सो धन्य धन्य उदार तियागी, खरचत नहिं छीजै अधिकाई॥२॥
तजि कर्म सकल भजु दृढ़ मत धरि, मरिये भा जीजै[8] मन लाई ।
अगम पंथ को चलना है मन, छाँड़ि दीजै अलसाई ॥३॥
जहँ लग तहँ लग एक ब्रह्म है, का सों सीखीजै[9] अतमाई[10] ।
खोजत खोजत हारि गयो सब, थाके सकल किनहुँ नहिं पाई ।४।

(१) दर्पन । (२) कहने में । (३) अचरज खेल । (४) होता या उठता है । (५) फरेबी । (६) जेब, शोभा । (७) आँक या जाँच कर । (८) चाहै मरै चाहै जियैं । (९) सीखिये । (१०) आत्म ज्ञान ।

काम क्रोध मद लोभ तजो तुम, हरि हर दम लीजै गाई ।
जन भीखा वै धन्य साधु जो, नाम अमल पीवैं छकियाई ॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

तू ज्ञानी जना देखहु आपै आपु बना ॥ १ ॥
आपु बिना आपन नहिं कोई समझहु बूझि बिचारि तना ।२।
अगम अगोचर बसत निरंतर साहब एक अनंत घना ॥३॥
मन क्रम बचन जो हरि रँग राते सो अब करैं कम कवना ॥४॥
(भीखा) ब्रह्म सरूप प्रकट पर अनहड़[1] बड़ा तासु मिलना ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

करि करम हरिहिं पर वारो, फल सानो[2] ना ॥ १ ॥
प्रभु मिलन हेतु प्रगटानो, केहु मानो ना ॥ २ ॥
सब साहब आपुइ अपनो, केहु जानो ना ॥ ३ ॥
प्रभु अनहद धुनि घहरानो, केहु कानो[3] ना ॥ ४ ॥
प्रभु प्रेम भक्ति को बानो, केहु ध्यानो ना ॥ ५ ॥
प्रभु ब्यापक पुरुष पुरानो, केहु ज्ञानो ना ॥ ६ ॥
मन भीखा भर्म भुलानो, पहिचानो ना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

तुम जानहु आतम राम अपनो हित कै ॥ टेक ॥
ज्ञान ध्यान बैराग सुदृढ़ तेहिं प्रेम भक्ति सुख धामा,
गायो गित[4] कै ॥ १ ॥
सुमिरन भजन बिचार में रत तेहिं, क्रोध होय होय गत कामा,
इन्द्री जित कै ॥ २ ॥
हरि सों प्रीति निरंतर जाकी, निस दिन आठो जामा,
भजनो नृत कै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्न अधर्म धर्म किये, ऊँच नीच तन खामा,
जन्मै तित कै ॥ ४ ॥

---

(१) कठिन । (२) मिलावो । (३) सुनो । (४) गीत ।

भीखा मन निग्रह[1] नहिं तब लों, जिव न लहै बिस्रामा,
चिंता चित कै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन अनुरागल हो सखिया ॥ टेक ॥
नाहीं संगत औ सो ठकठक, अलख कौन बिधि लखिया ।१।
जन्म मरन अति कष्ट करम कहँ, बहुत कहाँ लगि झँखिया ।२।
बिनु हरि भजन को भेष लिये, कहा दिये तिलक सिर तखिया[2] ।३।
आतम राम सरूप जाने बिन, होह दूध के मखिया ॥४॥
सतगुरु सब्दहिं साँचि गहो, तजि झूठ कपट मुख भखिया ॥५॥
बिन मिलले सुनले देखले बिन, हिया करत सुर्ति अँखिया ॥६॥
कृपा कटाच्छ करो जेहिं छिन, भरि कोर तनिक इक अँखिया ॥७॥
धन धन सो दिन पहर घरी पल, जब नाम सुधा रस चखिया ॥८॥
काल कराल जंजाल डरहिंगे, अबिनासी की धकिया[3] ॥९॥
जन भीखा पिया आपु भइल, उड़ि गैलि भरम की रखिया[4] ।१०।

॥ शब्द १५ ॥

ना जानों प्रभु का धौं रंग रचो री टेक ॥
ज्यों कुम्हार का चाक फिरावत यहि जग खंभ लगो री ॥१॥
जोई जोई रँग खानि खानि को सोइ सोइ सब्द करो री ॥२॥
यहि तन खेल तिकठिया लागो गोटी खूँटि[5] धरो री ॥३॥
काम क्रोध दुनो लगे दुकठिया तिकठा खेल उठो री ॥४॥
कह भीखा मोहिं सरन राखिये माँगत हौं कर जोरी ॥५॥
अबकी बार दुकठिया छूटे तुम लायक यहि थोरी[6] ॥६॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्द उठल कै मनोरवा हो, अनहद धुनि घहराई ॥१॥
सुनत सुनत चित लागल हो, दिन दिन रुचि अधिकाई ॥२॥

(१) शांत। (२)। साधुओं की टोपी। (३) धाक, प्रताप। (४) राख। (५) किनारे। (६) तुम्हारे लिये यह जरा सी बात है। (७) एक राग का नाम।

मन अनुमान मनोरवा हो, सुरति निरति अरुझाई ॥३॥
सब्द प्रकास मनोरवा हो, दिव्य दृष्टि दरसाई ॥४॥
सुद्ध सरूप मनोरवा हो, सतगुरु दिहल लखाई ॥५॥
भीखा हंस मनोरवा हो, छीर नीर बिलगाई ॥६॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सब्द ऊठन लगो, अनुभौ कछु बरनि न जाई ॥१॥
आनँद अगम उमँग भयो, ता पद जिव लागो लव लाई ॥२॥
सुनत सुनत तन तपन गई, छुटि गइ जग करम बलाई ॥३॥
नाद बिंद को जूह भयो, मनवाँ तहँ रहल भुलाई ॥४॥
पिरथी गगन इक सम भयो, आपे वहि तिभुवनराई ॥५॥
दूसर दृष्टि न आवई, सोइ भीखा चरन समाई ॥६॥

॥ शब्द १८ ॥

राम नाम भजि ले मन भाई ।
काहे कै रोस[1] करहु घरही में, एकै तुम हमरे पितु माई ॥१॥
देखहु सुमति संग कै भायप[2], छिमा सील सँतोष षसमाई ।
एकै रहनि गहनि एकै मति, ज्ञान बिबेक बिचार सदाई ॥२॥
होहु परम पद के अधिकारी, संत सभा महँ बहुत बड़ाई ।
कुमति प्रपंच कुचाल सकल यह, तुम्हरी देखि बहुत मुसकाई ।३।
अब तुम भजहु सहाय समेतो, पाँच पचीस तीन समुदाई[3] ।
तुम अनादि सुत बड़े प्रतापी, छोट कर्म करि होहि हँसाई ॥४॥
तुम मोहिं कीन्ह हाल को गेदो[4], इत उत यहँ भरमाई ।
तेहिं दुख सुख को अंत कहै को, तन धरि धरि मोहिं बहुत नचाई।५।
अब अपनो उनमेख[5] तजन की, सपथ[6] करो दृढ़ मोहिं सोहाई ।
जन भीखा कै कहा मानु अब, मन तोहिं राम कै लाख दोहाई ।६।

(१) क्रोध, लड़ाई। (२) भैवादी, भाई बंदी। (३) इकट्ठा करके। (४) बच्चा। (५) अभिमान। (६) क़सम।

॥ शब्द १९ ॥

जोग जुक्ति गुरु लगन लगाई। साजि बरात बियाहन जाई ।१।
उर्ध पवन मन धुजा बिराजै। सुतरी[1] अस्पी[2] अनहद बाजै।२।
नरसिंघा[3] तुरही[3] सहनाई। घंटा धुनि अंबर[4] पर छाई ॥३॥
पालकी सुरति निरति लौ लीना। लागे पाँच कहार प्रबीना ॥४॥
अठकठ[5] साज बरनि नहिं जाई। संगी सो इक एक सोहाई ॥५॥
अचरज एक जु देखा भली। दुलहिन खोजन पिय को चली ।६।
सुन्न सिखर माँडो छायो। इँगला पिंगला चौक पुरायो ।७।
प्रेम प्रीति कै साज सजाई। कुम्भक पूरक कलस भराई ॥८॥
गावहिं पाँच पचीसो गुनी। सुनत मगन है साधू मुनी ॥९॥
सेंदुर उदित जोति जगमगे। आपन नाह[6] आपु से पगे[7] ।१०।
दुलहिन नाम सेव करि पाई। नाद बिंद बहुतै भौजाई ।११।
भीखा मगन रहे हर हाल। तजि परपंच जगत को ख्याल।१२।

॥ शब्द २० ॥

हो पतित-पावन नाम हिम्मत न दुरे।
जैसे किरन सूर सम पुरे ॥ टेक ॥
जैसे प्रीति प्रान अरु देही। तैसे हरि जन परम सनेही ॥१॥
जैसे प्रीति जला अरु मीना। तैसे सुरति निरति लौलीना ॥२॥
जैसे पदुम[8] नाल बिच तागा। तैसे जीव ब्रह्म इक लागा ॥३॥
जैसे कीट भृङ्ग रँग जागा। तैसे आतम सों मन पागा ॥४॥
जैसे भीखा फनि[9] मनि लाय। तैसे दृष्टि सरूप समाय ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

निज आतम भजि लेहु तने, जैसे घरे तैसे बने ॥टेक॥
ज्ञान रत काम तज क्रोध थिर गने।
और बिषै तज निज रूप जने[10]॥ १ ॥

(१) ऊँट पर का डंका। (२) घोड़े पर का डंका। (३) बाजों के नाम। (४) आकाश। (५) आठ काठ का (६)। पति (७) मिल गये। (८) कँवल। (९) साँप। (१०) जाने।

गुरु गम जोग करै युक्ति सधने ।
आपा आपु ही में उक्ति सयने ॥ २
आदि अंत मध एक व्यापक सघने ।
माया परपंच झूँठ जक्त सपने ॥ ३ ॥
दीन के दयाल जन आरत समने ।
केवल भक्ति माँगे भीखा छिन छिने ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जान दे करौं मनुहरिया[1] हो ॥ टेक ॥
अनेक जतन करिके समझाओं,
मानत नाहिं गँवरिया हो ॥ १ ॥
करत करेरी नैन बैन सँग,
कैसे के उतरब दरिया हो ॥ २ ॥
या मन तें सुर नर मुनि थाके,
नर बपुरा कित धरिया हो ॥ ३ ॥
पार भइलौं पिव पीव पुकारत,
कहत गुलाल भिखरिया हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

तू हे जोगी जना ब्रह्म रूप लख जिव अपना ॥ १ ॥
मैं नाहीं निज साहब आपै कछु इक फेर परचो इतना ॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम व्रत सोवत साँच जगे सुपना ॥३॥
सख दुख भोग भोगत है जितने तितने पाप पुन्न तपना ॥४॥
सतगुरु कह्यो बिचारि भेद मुख भीखा अजपा जप जपना ॥५॥

॥ शब्द २४ ॥

इक दिन मन देखल बौराइल । सास्तर अंग[2] सरूप लजाइल ।१।
मेरी ओर न जोरत नैना । सात्विक बचन बोलता बैना ॥२॥

(१) चिरौरी, खुशामद । (२) छः अंग करके अर्थात सर्वाङ्ग ।

दसा उन्मत मतवाला जैसे । डगमग चित पग परता तैसे ॥३॥
चंचल चकित चहूँ दिसि जावै । इत उत छिन छिन पल पल धावै।४।
बिषया लंपट करत अधीना । तृस्नावती सदा मलीना ॥५॥
जो कतहूँ हरि चरचा सुनै । तजि माया परपंचहि गुनै ॥६॥
काम क्रोध मद गर्ब भुलाई । लहवत[1] बुद्धि करत लरिकाई ॥७।
सो तौ भली बेर नहिं पावै । जो नहिं राम चरन चित लावै ॥८॥
थाको बेद बेदांत सिखाई । भीखा के मन लाज न आई ॥६॥

॥ शब्द २५ ॥

नैन सेज निज पिय पौढ़ाई, सो सुख मौजै दिलहिं जनाई ॥१।
बोलता ब्रह्म आतमा एकै, नभाव मिलको सकै दुराई[2] ॥२॥
अगम अगोचर अधर अकथ प्रभु, तासे कहौंकौनमुँह लाई ॥३॥
अंग अंग पर कोटि कोटि छबि, कहत सो भेद है सकुचाई ॥४॥
ईसुर की यह प्रगट इसुरता, भीखाब्यापक रूप अघाई ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

हे मन आतम सों रति करन, ता तें और सकल प रिहरन ।१।
परमातम चेतन्य रूख[3] तन, रूप सुपकु[4] फल फरन ।
दृष्टि बिहंग सुरति लेइ जावै, खात सुखद[5] दुख हरन ॥२॥
आवत जात केतिक जुग यहि मय, समुझि कबहुँ नहिं परन ।
भीखा दरद पराय[6] जाहि पर, कोर तनिक इक ढरन ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

हमरो मनुवाँ बड़ो अनारी । साहब निकट न करत चिन्हारी ॥१॥
प्रानायाम न जुक्ति बिचारी । अजपा जाप न लावै तारी ॥२॥
खोलै न भ्रम तें बज्र किवारी । निज सरूप नहिं देखि मुरारी ॥३॥
प्रान अपान मिलन न सँवारी । गगन गवन नहिं सब्द उचारी ॥४॥

---

(१) लाख सरीखी समझ जो गर्मी पाकर टिघल जाय और फिर कड़ी की कड़ी हो जाय । (२) छिपाना । (३) पेड़ । (४) अच्छा पका हुआ । (५) सुखदाई । (६) भाग जाय

सुन्न समाधि न चेत बिसारी । यह लालसा[1] उर बड़ी हमारी ॥५॥
सर्ब दान गुरु दाता भारी । जाचक सिष्य सो लेत भिखारी ॥६॥

॥ शब्द २८ ॥

सब भूला किधौं हमहिं भुलाने । सो न भुला जाके आतम ध्याने ॥१॥
सब घट ब्रह्म बोलता आही । दुनिया नाम कहौं मैं काही ॥२॥
दुनिया लोक बेद मति थापे । हमरे गुरु गम अजपा जापे ॥३॥
हरि जन जे हरि रूप समावे । घमासान[2] भये सूर कहावे ॥४॥
कहे भीखा क्यों नाहीं नाहीं[3] । जब लगिसाँच झूठ तन माहीं ॥५॥

॥ शब्द २९ ॥

रे मन ह्वै है कवन गति मेरी । मेरी समझ बूझ होत देरी ॥टेक॥
यह संसार आये गति माया लागी धाये ।
राम नाम नहिं जान्यो मति गति न निबेरी ॥१॥
भजन करारे[4] आये कबहीं न साँचि गाये ।
करम कुटिल करे मति गइ तेरी ॥२॥
भीखा चरनों में लीजै मन माया दूरि कीजै ।
बार बार माँगै इहै प्रीति लागै तेरी ॥३॥

॥ शब्द ३० ॥

अधम मन राम नाम पद गहो ।
तातें यह तन धरि निरबहो[5] ॥टेक॥
अलख न लखि जाय अजपा न जपि जाय ।
अनहद के हद नाहीं हो ॥१॥
कथनी अकथ कवनि बिधि होवे ।
जहँ नाहीं तहँ ताही हो ॥२॥
बिन मूल पेड़ फल रूप सोई ।
निज दृष्टि बिन देखी कहो ॥३॥

---

(१) हौसला । (२) युद्ध । (३) नेत नेत । (४) इकरार । (५) निर्बाह हो ।

बिन अकार को रूह नूर है। अगिनि बिन भ्रम में दह्यो ॥४॥
बोलता है आपु माहीं आतमा है हम नाहीं।
अविगति की गति महो[1] ॥५॥
पूरन ब्रह्म सकल घट ब्यापक। आदि अंत भरिपूर रह्यो ॥६॥
सतगुरु सत दियो सुरति निरति लियो।
जीव मिलि पिय पहुँच हो ॥७॥
जन भीखा अब कारन छोड़ो। तत्त पदारथ हाथ लह्यो ॥८॥

॥ शब्द ३१ ॥

उठ्यो दिल अनुमान हरि ध्यान ॥ टेक ॥
भर्म करि भूल्यो आपु अपान।
अब चीन्हो निज पति भगवान ॥१॥
मन बच क्रम दृढ़ मत परवान।
वारो प्रभु पर तन मन प्रान ॥२॥
सब्द प्रकास दियो गुरु दान।
देखत सुनत नैन बिनु कान ॥३॥
जा को सुख सोइ जानत जान।
हरि रस मधुर कियो जिन पान ॥४॥
निर्गुन ब्रह्म रूप निर्बान।
भीखा जल ओला गलतान[2] ॥५॥

॥ शब्द ३२ ॥

कियो करार भजन करतार ॥टेक॥
जनमत मरत अनेक प्रकार,
त्रसित[3] कउल पुनि बारम्बार ॥१॥
अब की बार पायो छुटकार,
सुमिरन ध्यान करो निरधार ॥२॥

---

(१) महा, बड़ी। (२) लीन। (३) डरा हुआ।

पायो सुभग मनुष अवतार,
पवन लगे भ्रमि भुलेउ बिचार ॥३॥
सुत दारा धन धाम पियार,
नफा कहाँ तें मूल बिगार ॥४॥
जब गुरु खोलहिं बज्र किवार,
भीखा सो पहुँचे दरबार ॥५॥

॥ शब्द ३३ ॥

थाम्है मूल पवन को धीरा, जो नेकु गहै दिल धीरा ॥१॥
दूजे अप तीजे तेज अपरबल, चौथे वायु तन पीरा ॥२॥
पँचयें अकास छठे तम छोड़ो, सतयें होइ मन थीरा ॥३॥
अपरम्पार वस्तु की जागह, भीखा बोध फकीरा ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन चाहत दृष्टि निहारी।
सुरति निरति अंतर लै जावो, नित सरूप अनुहारी ॥१॥
जोग जुक्ति मिलि परखन लागो, पूरन ब्रह्म बिचारी।
पुलकि पुलकि आपा महँ चीन्हत, देखत छबि उँजियारी ॥२॥
सुखमन के घर आसन माँड़ो, इंगल पिंगलहिं सुढारी।
सुन्न निरंतर साहब आपे, सब घट सब तें न्यारी ॥३॥
प्रेम प्रीति तन मन धन अरपो, प्रभुजी की बलिहारी।
गुरु गुलाल के चरन कमल रज, लावत माथ भिखारी ॥४॥

॥ शब्द ३५ ॥

जन मन मनहीं में धुनि लाई ॥ टेक ॥
गुरु प्रताप साधु की संगति, नाम पदारथ सुनि पाई ॥१॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है, फागु सोहावन घर आई ॥२॥
तन मन प्रान ताहि पर वारो, रहो चरन में लपटाई ॥३॥
भीखा अब के दाँव तुम्हारो, मन चित दै हरिहों गाई ॥४॥

॥ शब्द २६ ॥

करै पाप पुन्न की लदनी, जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥१॥
लागो हासिल कर्म हैवान,
टूटो परत नहीं कछु फाजिल, जन्मत मरत निदान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥२॥
त्यागि भजे हरि नामहीं, हिये प्रीति मन आन।
जोग जुक्ति मन लावे मेरवै[1] प्रान अपान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥३॥
गगन गवन करि जाती तेहिं बिच परल उद्यान[2],
सुधि बुधि सबहीं हरि लियो करब कवन बिधि ध्यान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥४॥
नाद अनाहद बाजल उह सब्द सुनो बिनु कान,
पुलकि भयो जिय ताहि छिन उदै भयो ब्रह्मज्ञान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥५॥
आतम राम निरामय अलख पुरुष निरबान,
भीखा ता छबि देखत सो केहि मुख करौं बयान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥६॥

॥ शब्द ३७ ॥

साधो भाई सब महँ निज पहिचानी।
जग पूरन चारिउ खानी ॥ टेक ॥
अविगति अलख अखँड अनमूरति, कोउ देखे गुरु ज्ञानी ॥१॥
ता पद जाइ कोऊ कोउ पहुँचे, जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥२॥
भीखा धन्य जो हरि सँग राते, सोई हैं साधु परानी ॥३॥

॥ शब्द ३८ ॥

राम से करु प्रीति अब के राम से करु प्रीति, हे मन ॥१॥

(१) मिलावै। (२) स्वाँस का नाम।

राम बिना कोउ काम न आवै, अंत ढहेगी भीति, यह तन ॥२॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपने, हरि बिन नहिं कोउ हीत, यह बन ॥३॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज, धरु भीखा उर चीत, यह धन ॥४॥

॥ शब्द ३९ ॥

संतो चरन कमल मन बसले हो ।
ताते जन सरनागति रस ले हो ॥ टेक ॥
गुरु प्रताप साध की संगति जोग जुक्ति उर लसले हो ॥१॥
भीखा हरि पद चहै समाने सब्द सरोवर धसले हो ॥२॥

॥ शब्द ४० ॥

जोग जुक्ति परखन लगो, समुझत वार न पार ॥१॥
नेकु दृष्टि नहिं आवई, जिउ पर परल खँभार ॥२॥
उबि उबि घुमि घुमि उलटि गयो मन, सुनि धुनि चढ़ल पठार ।३।
सुन्न सिखर पर जाइ रह्यो है, खुलि सब भरम किवार ॥४॥
बासर पूरन[1] चंद उगो है, अचरज निज रूप हमार ॥५॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ लगो है, भीखा गुरु चरन अधार ॥६॥

॥ शब्द ४१ ॥

मन करिले नाम भजन दम दम ॥ टेक ॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, छीजै करो
किरति जम जम ॥ १ ॥
आतम राम प्रगट निज ता को, तन मन अर्पन कीजै,
ब्यापक सम सम ॥ २ ॥
सतगुरु कह्यो सुझाय जवनि बिधि, दृष्टि रूप जल भींजै,
सिलन गम गम ॥ ३ ॥
होइ एकांत सुतंत्र बैठि के, अनहद धुनि सुनि लीजै,
बाजत झम झम ॥ ४ ॥
भीखा धन्य जो त्यागि जक्त सुख, हरि को रस मद पीवै,
अस जन कम कम ॥ ५ ॥

---

(१) पूरनमासी का दिन ।

॥ शब्द ४२ ॥

आसिक तूँ यारे, खोजो मासूक हरि प्यारे ॥ टेक ॥
आसिक यारे सब सों न्यारे, निकटहिं अपरंपारे ॥ १ ॥
आसिक यारे बहुत पुकारे, हे पिय पिय पपिहा रे।
आसिक यारे स्वाँति अधारे, चात्रिक तन मन वारे ॥ २ ॥
आसिक यारे काज सँवारे, मिलो प्रभु प्रान हमारे।
भीखा यारे एक बिचारे, भ्रम कपटहिं परच[1] उघारे ॥३॥

॥ शब्द ४३ ॥

मोहिं कहो आपनो सेवक ॥
हिय जिय नैन स्रवन नासा सिर, अछय पुरुष तुम देवक ॥१॥
जेहि चाहो भव तें काढ़न है, कनहरिया[2] गुरु खेवक ॥२॥
भूखो नैन रूप को चाहत, मिलनि सकल रस मेवक[3] ॥३॥
भीखा अमरंपार तुमहिं अस, कौन भजन करि लेवक ॥४॥

ककहरा

(१)

भजि लेहु सुरति लगाय. ककहरा नाम का ॥ टेक ॥
क—काया में करत कलोल, रैनि दिनि सोहं बोलै।
ख—खोजै जो चित लाय, भरम को अंतर खोलै ॥ १ ॥
ग—ग्यान गुरू दाया कियो, दियो महा परसाद।
घ—घुँमड़ि घहरात गगन में, घटा अनाहद नाद ॥ २ ॥
न—नैन सों देखो उलटि कै, ठाकुर को दरबारी।
च—चमतकार वह नूर, पूर संतन हितकारी ॥ ३ ॥
छ—छिन माँ भनि तिन[4] कर्म गयो है, जीव ब्रह्म के पास।
ज—जैजै सब्द होत तिहुँ पुर में, सुद्ध सरूप अकास ॥ ४ ॥
झ—झकोरि झपाक झपटि, नर समय गँवाई।
न—नहिं समुझत निज मूल, अंध है दृष्टि छिपाई ॥ ५ ॥

---

(१) तह, गिलाफ। (२) पतवार पकड़ने वाला। (३) मेवा। (४) तीन।

ट—टँड[1] संकट में ग्रसित है, सुत दारा रहसाई[2]।
ठ—ठठाय मुसकाय हँसतु है, मनहुँ परल निधि[3] पाई ॥ ६ ॥
ड--डाँवाँडोल का फिरहु, नेकु तुम समुझहु भाई।
ढ—ढरके जबही[4] बुंद, बपू[5] की खबरि न पाई ॥ ७ ॥
न--नमो नमो चरनन नमो, धरो नाम के ओट।
त--तंत[6] माल सब राखि लीजिये, कबहुँ परत नहिं टोट ॥ ८॥
थ—थकित भयो थहराय, ज्ञान जब हिरदे आया।
द--दरकि[7] हिये बहु जीव, ब्रह्म में आनि समाया ॥ ९ ॥
ध—धक्का सब को सहै, जपै सो अजपा जाप।
न—निबहि जाय सो संत कहावे, जा के भक्ति प्रताप ॥१०॥
प—परमेसुर प्रगट, आपु में आपु छिपाय।
फ—फाजिल जो होय, सोइ यह मतिहिं समाय ॥११॥
ब— बायें बस्ती नगर, तजै एक ही बार।
भ--भय भव भटका भरम निवारै, केवल सत्त अधार ॥१२॥
म—माया परपंच, पाँच में भरमत रहई।
य—यन्मत[8] अरु मरत, देंह को अंत न लहई ॥१३॥
र—रमता घट घट बसै, तेहिं काहे नहिं जान।
ल—लै लाय जो ताहि पुरुष सों, पावै पद निर्बान ॥१४॥
व—वावागवन[9] न होय, पुरुष पुरुसोतम जाने।
श—समुझे कोउ संत, सोई यह भेद समाने ॥१५॥
ष—षड्ज्ञान अमान लियो है, कियो बिचार को धार।
स—संसय काठ कठंगरा, ता सों काटत लगे न बार ॥१६॥
ह—हक्क हलालहिं सिदिक[10], समुझि हराम न खावै।
छ--छिमा सील संतोष, सहज में जो कछु आवै ॥१७॥

---

(१) झगड़ा। (२) बिलास करता है। (३) पड़ा हुआ धन। (४) जब जीव निकल गया। (५) शरीर। (६) तत्व। (७) धड़क कर। (८) जन्मत। (९) आवागवन। (१०) जाइज़।

अइ एउ[1] गुरु गुलाल जी, दियो दान समुदाय।
जाचक भीख भीखानन्द पायो, आतम लियो दरसाय ॥१८॥

अलिफ़नामा

बिनु हरि कृपा न होय ककहरा ज्ञान का ॥ टेक ॥
अलिफ—अलाह अभेद सुरति जद मुर्सिद देवे।
बे—बहके नहिं दूर निकटहीं दरसन लेवे ॥ १ ॥
ते—ते ब्यापक सकल है जल थल बन गृह छाइ।
से—से आप मासूक बनो है कोउ आसिक दरसाइ ॥ २ ॥
जीम—जबून है जहर जक्त को भोग सुभारी।
हे—हक्क न समुझत नान करम सों करत खुवारी ॥ ३ ॥
खे—खिन खिन मन रहत है माया के परपंच।
दाल—दंभ निग्रह नहीं[2] कस पावे सुख संच ॥ ४ ॥
जाल—जाल फाँस नर फँस्यो आपु तें आपु बझाये।
रे—ररंकार निरधार जन हो सहज छुटाये ॥ ५ ॥
जे—जहूर वह नूर देखि जिय आनन्द बिलास।
सीन—संसै तम छूटि गयो है ता पद लियो निवास ॥ ६ ॥
शीन—सनै सनै[3] वह प्रेम प्रीति परमारथ लागै।
साद—साधना सधै जुक्ति सों अनुभौ जागै ॥ ७ ॥
जाद—जाती नाम भयो सब बिधि पूरन काम।
तो—तेज पुंज तपवत चहुँ जुग ऐसो प्रभु को नाम ॥ ८ ॥
जो—जो मौजै करै पाप अरु पुन्न न लेखै।
ऐन—ऐन लेय जद हाथ रूप निज साहब देखै ॥ ९ ॥
गैन—ग्यान उद्वैत भयो है सतगुरु के परताप।
फे—फहमंदा[4] भजन को दिब्य दृष्टि को जाप ॥१०॥

---

(१) आयौ। (२) कपट को दूर नहीं किया। (३) धीरे धीरे। (४) जानकार, भेदी।

ट—टँड[१] संकट में ग्रसित है, सुत दारा रहसाई[२]।
ठ—ठठाय मुसकाय हँसतु है, मनहुँ परल निधि[३] पाई ॥ ६ ॥
ड—डाँवाँडोल का फिरहु, नेकु तुम समुझहु भाई।
ढ—ढरके जबही[४] बुंद, बपू[५] की खबरि न पाई ॥ ७ ॥
न—नमो नमो चरनन नमो, धरो नाम कै ओट।
त—तंत[६] माल सब राखि लीजिये, कबहुँ परत नहिं टोट ॥ ८॥
थ—थकित भयो थहराय, ज्ञान जब हिरदे आया।
द—दरकि[७] हिये बहु जीव, ब्रह्म में आनि समाया ॥ ९ ॥
ध—धक्का सब को सहै, जपै सो अजपा जाप।
न—निबहि जाय सो संत कहावे, जा के भक्ति प्रताप ॥१०॥
प—परमेसुर प्रगट, आपु में आपु छिपाय।
फ—फाजिल जो होय, सोइ यह मतिहिं समाय ॥११॥
ब—बायें बस्ती नगर, तजै एक ही बार।
भ—भय भव भटका भरम निवारै, केवल सत्त अधार ॥१२॥
म—माया परपंच, पाँच में भरमत रहई।
य—यन्मत[८] अरु मरत, देह को अंत न लहई ॥१३॥
र—रमता घट घट बसै, तेहिं काहे नहिं जान।
ल—लै लाय जो ताहि पुरुष सों, पावै पद निर्बान ॥१४॥
व—वावागवन[९] न होय, पुरुष पुरुसोतम जाने।
श—समुझै कोउ संत, सोई यह भेद समाने ॥१५॥
ष—षड्ग ज्ञान अमान लियो है, कियो बिचार को धार।
स—संसय काठ कठंगरा, ता सों काटत लगे न बार ॥१६॥
ह—हक्क हलालहिं सिदिक[१०], समुझि हराम न खावै।
छ—छिमा सील संतोष, सहज में जो कछु आवै ॥१७॥

---

(१) झगड़ा। (२) बिलास करता है। (३) पड़ा हुआ धन। (४) जब जीव निकल गया। (५) शरीर। (६) तत्व। (७) धड़क कर। (८) जन्मत। (९) आवागवन। (१०) जाइज़।

अइ एउ[1] गुरु गुलाल जी, दियो दान समुदाय।
जाचक भीख भीखानन्द पायो, आतम लियो दरसाय ॥१८॥

अलिफ़नामा

बिनु हरि कृपा न होय ककहरा ज्ञान का ॥ टेक ॥
अलिफ—अलाह अभेद सुरति जद मुर्सिद देवे।
बे—बहके नहिं दूर निकटहीं दरसन लेवे ॥ १ ॥
ते—ते ब्यापक सकल है जल थल बन गृह छाइ।
से—से आप मासूक बनो है कोउ आसिक दरसाइ ॥ २ ॥
जीम—जबून है जहर जक्त को भोग सुभा री।
हे—हक्क न समुझत नान करम सों करत खुवारी ॥ ३ ॥
खे—खिन खिन मन रहत है माया के परपंच।
दाल—दंभ निग्रह नहीं[2] कस पावे सुख संच ॥ ४ ॥
जाल—जाल फाँस नर फँस्यो आपु तें आपु बझाये।
रे—ररंकार निरधार जन हो सहज छुटाये ॥ ५ ॥
जे—जहूर वह नूर देखि जिय आनन्द बिलास।
सीन—संसै तम छूटि गयो है ता पद लियो निवास ॥ ६ ॥
शीन—सनै सनै[3] वह प्रेम प्रीति परमारथ लागै।
साद—साधना सधै जुक्ति सों अनुभौ जागै ॥ ७ ॥
जाद—जाती नाम भयो सब बिधि पूरन काम।
तो—तेज पुंज तपवत चहुँ जुग ऐसो प्रभु को नाम ॥ ८ ॥
जो—जो मौजै करै पाप अरु पुन्न न लेखै।
ऐन—ऐन लेय जद हाथ रूप निज साहब देखै ॥ ९ ॥
गैन—ग्यान उद्दैत भयो है सतगुरु के परताप।
फे—फहमदा[4] भजन को दिब्य दृष्टि को जाप ॥१०॥

---

(१) आयौ। (२) कपट को दूर नहीं किया। (३) धीरे धीरे। (४) जानकार, भेदी।

क़ाफ-कहर है लाफ[1] झूठ की तजिये आसा ।
काफ-कमाल करार सत्त को जूह निरासा ॥११॥
लाम-लाहुत[2] सुठि[3] सिखर है दूरिहुँ तें बहु दूर ।
मीम-मरजीवा है रहै सोइ पावै दरस हजूर ॥१२॥
नूँ—नतन[3] छवि देइ ढुरहुरा[4] सुन्दर राजै ।
वाव-वाहै वाह सो अहै बचन मुख कहत न छाजै ॥१३॥
हे-हद बेहद इक सम भयो मध्य बोलता आहि ।
लामअलिफ-सो निकटहिं पावो चित दै चितवहु ताहि ॥१४॥
हमजा—हम हमार द्वैत तहँ नाहिन सोहै ।
ये-येक तत्त है ज्ञान ध्यान तब जन्म न मोहै ॥१५॥
तीनि आँक में बस्तु सकल है रज तम सत सम ईस ।
भीखा नाम सुन्न[5] जब दीन्हो तब भयो अच्छर तीस ॥१६॥

॥ पहाड़ा ॥

एका एक मिलै गुरु देवा, सिष सोई जो लावै सेवा ।
तन मन वार चरन चित धारा, एक दहाई दसवें द्वारा ॥ १ ॥
दूआ दुई द्वैत जो तजै, जोग जुगति मिलि आपा भजै[6] ।
सुरति बिचारि निरति पहँ गयऊ, दुइ पर सुन्न बीस गुन भयऊ ॥२॥
तीया तीनि ताप जब मेटै, तबही जीव नरायन भेंटै ।
मका[7] मदीना[7] घट में खोजा, तीन दहाई तीसो रोजा ॥ ३ ॥
चौथे चार खानि हैं जेते, सब घट ब्रह्म बोलता तेते ।
घाटि[8] कहूँ नहिं हाल हजूरा, चार दहाई चालिस पूरा ॥ ४ ॥
पचयें पाँचो मुद्रा साधे, ससि और सूर अकासे बाँधे ।
प्रानायाम पवन परगासा, पाँच सुन्न पर भयो पचासा ॥५॥

(१) गप । (२) त्रिकुटी । (३) सुन्दर । (४) थरहरा । (५) सिफ़र । (६) भागै, दूर ही । (७) मुसलमानों के तीर्थ । (८) कमी ।

छठयें चक्र कठिन मति वाही, जे निरहे जेहि राम निबाही।
चढ़ै पवन ऊरधमुख भाठी, छः दहाई तिह पर साठी ॥६॥
सतयें सब्द अनाहद बाजा, तूर सुनत मनुआँ भयो राजा।
रैयत बंध अमल बरजोरा, सात दहाई सत्तर चोरा ॥ ७ ॥
अठयें अष्ट कमल दल फूला, जोति रूप लखि जियरा भूला।
उदित भये परगासित ज्ञाना, आठ दहाई अस्सी भाना ॥८॥
नौवें नाम निरंजन जोती, सहज समाधि जासु की होती।
सो जानै जो जावै तहँवाँ नव दहाई नब्बे जहवाँ ॥९॥
दसयें दसो दिसा में मेला, भीखा ब्रह्म निरंतर खेला।
दसैं दहाई अजपा जाप, बढ़ै दस गुना गुन परताप ॥१०॥
जो कोइ नाम पहाड़ा पढ़ै, प्रेम प्रीति दस गूना बढ़ै ॥११॥

॥ कुण्डलिया ॥

(१)

जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिं ॥
बेमुख बहु घर माहिं एक तें एक अपबल।
तेहू तें हैं अधिक अधिक तें अधिक महाबल ॥
तेहि में मन अरु पवन त्रिगुन कै डोरि लगाई।
बाँधे सब जग जाल छुटै कोऊ नहिं पाई ॥
जो भीखा सुमिरै राम को तो सकल अर्थ होइ जाहि।
जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिं ॥

(२)

राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रवीन ॥
सो जन परम प्रवीन लोक अरु बेद बखान।
सतसंगति में भाव भक्ति परमानन्द जानै ॥
सकल विषय को त्यागि बहुरि परबेस[1] न पावै।

---

(१) दखल।

केवल आपै आपु आपु में आपु छिपावै ॥
भीखा सब तें छोट होइ रहै चरन लवलीन ।
राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रवीन ॥

(३)

जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥
सतगुरु खोजहु जाइ जहाँ वै साहब रहते ।
निसि दिनि इहै बिचारि सदा हरि को गुन कहते ॥
समुझै बूझि बिचारि कै तन मन लावै सेव ।
कृपा करहिं तब रीझि कै नाम देहिं गुरुदेव ॥
भीखा बिछुरे जुगन के पल महँ देहिं मिलाइ ।
जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥

(४)

जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग ॥
हिये न हरि अनुराग पागि मन बिषै मिठाई ।
जग परपंच में सिद्ध साध्य मानो नव निधि पाई ॥
जहाँ कथा हरि भक्ति भक्त कै रहनि न भावै ।
गुनना गुनै बेकाम झूँठ में मन सुख पावै ॥
भीखा राम जाने बिना लगो करम माँ दाग ।
जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग ॥

(५)

मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजे सो धन्य ॥
राम भजे सो धन्य धन्य बपु[1] मंगलकारी ।
राम चरन अनुराग परम पद को अधिकारी ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह की लहरि न आवै ।
परमातम चैतन्य रूप महँ दृष्टि समावै ॥

(१) शरीर ।

ब्यापक पूरन ब्रह्म है भीखा रहनि अनन्य ।
मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजै सो धन्य ॥

(६)

दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ ॥
होनी होइ सो होइ निंदवै भावै कोई ।
अहित करै अपमान मान तहँ चहै न वोई ॥
दुर्बचन बहुत मुख पर कहै हठ करि करै बिषाद ।
सो नहिं लावै आपु पर जनता को रखु मरजाद ॥
परै सो ओढ़ै सीस पर भीखा सनमुख जोइ ।
दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ ॥

(७)

धनि सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥
ता सम तुलै न कोइ होइ निज हरि को दासा ।
रहै चरन लौलीन राम को सेवक खासा ॥
सेवक सेवकाई लहै भाव भक्ति परवान ।
सेवा को फल जोग है भक्तवस्य भगवान[१] ॥
केवल पूरन ब्रह्म है भीखा एक न दोइ ।
धन्य सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥

(८)

धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥
पसु सम करै बिहार मुरख जानै नहिं काज अकाज ।
बृषभ[२] सहस कामी बड़ा इंद्री सहित समाज ॥
जड़ सरीर नर बुद्धि नहिं इनके सींग न पोंछ ।
खाहिं पेट भरि सोवहीं जानहिं अगति न मोछ[३] ॥

(१) सेवा का फल मेला है क्योंकि भगवान भक्त के बस में हैं। (२) साँड़। (३) कुगति और मुक्ति में भेद नहीं समझते।

(भीखा) धृग जीवन धृग जन्म है धृग लीन्हों अवतार ।
धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥

(९)

यह तन अथन[1] सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥
कुंजी सतगुरु पास कृपा करि खोलहिं जबहीं ।
बूझहिं जेहि अधिकार बस्तु देखलावहिं तबहीं ॥
जड़ि ताला बज्र कपाट को तहँ बैठे आतम राम ।
देखे सुने की गम नहीं नहिं आँखि कान को काम ॥
भीखा प्रीति प्रतीति धरु करु इष्ट बचन बिस्वास ।
यह तन अथन सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥

(१०)

मन लागो गोबिंद सों छोड़ि सकल भ्रमफाँस ॥
छोड़ि सकल भ्रमफाँस आस नहिं काहु की करते ।
यह माया परपंच ताहि महँ रहते डरते ॥
केवल ब्रह्म प्रकास मों गुरु आप कह्यो करि सैन ।
छुटै सकल मन कामना सब्द रूप भयो ऐन ॥
भीखा मन बच कर्मना इक भक्तन कै आस ।
मन लागो गोबिंद सों छोड़ि सकल भ्रम फाँस ॥

(११)

जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥
जोग मिलन को नाम सुरति जा मिलै निरति जब ।
दिब्य दृष्टि संजुक्त देखि के मिलै रूप तब ॥
जीव मिलै जा पीव को पीव स्वयं भगवान ।
तब सक्ति मिलै जा सीव को सीव परम कल्यान ॥
भीखा ईसुर की कला यह ईसुरताई काम ।

---

(१) घर ।

जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥

(१२)

सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास ॥
तेहि कहिये हरिदास आस जेहि दूसर नाहीं ।
सहजहिं कियो बिचार जाय रहि सतगुरु पाहीं ॥
सीस चढ़ायो ताहि को हलुक भयो देइ भार ।
टहल करे मुख देखि रुख साहब परम उदार ॥
भीखा रीझै कृपा करि देवै रूप प्रकास ।
सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास ॥

(१३)

पाहुन आयो भाव सों घर में नहीं अनाज ॥
घर में नहीं अनाज भजन बिनु खाली जानो ।
सत्य नाम गयो भूल झूठ मन माया जानो ॥
महा प्रतापी राम जी ताको दियो बिसारि ।
अब कर छाती का हनो[1] गयो सो बाजी हारि ॥
भीखा गये हरि भजन बिनु तुरतहिं भयो अकाज ।
पाहुन आयो भाव सों घर में नहीं अनाज ।

(१४)

बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं ॥
अच्छर समुझा नाहिं रहा जैसे का तैसा ।
परमारथ सों पीठ स्वारथ सन्मुख होइ बैसा ॥
सास्तर मति को ज्ञान करम भ्रम में मन लावै ।
छुइ न गयो विज्ञान परम पद को पहुँचावै ॥
भीखा देखै आपु को ब्रह्म रूप हिये माहिं ।
बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं ॥

(१) अब हाथ से छाती कूटने से क्या होता है ।

(१५)

राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥
जीवन का फल सोइ मगन मन हरि जस गावै ।
परमातम चेतन्य रूप आपा दरसावै ॥
जोग पपील[1] को मत कठिन अंध धुन्ध दरबार ।
सोहं सन्मुख सहज घर मत बिहंग निरधार ॥
भीखा त्रैगुन गुनन के बस्य परा सब कोइ ।
राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥

(१६)

राम भजन को कौल कियो दिन ऐसहि ऐसहि जात ॥
ऐसहि ऐसहि जात चेत नहिं करत अनारी ।
लोक लाज कुल कानि[2] मानि हरि नाम बिसारी ॥
अपने मनै सपूत सूर अति से बल भारी ।
जनिहै बिते दिन चारि काल सिर मुगदर मारी ॥
भीखा समुझत गर्भ बास दुख थरथर कंपत गात ।
राम भजन को कौल कियो दिन ऐसहि ऐसहि जात ॥

(१७)

सुत कलित्र[3] धन धाम सुख मानो सुपना को सो साँच ॥
सुपना को सो साँच मानि ता को पतियाना ।
कहा रह्यो का भयो समुझि नहिं करत अयाना[4] ॥
ज्यों पवन उदक[5] भँवरी दियो कहै बवंडर भूत ।
बढ़ो बहुत फिरि मिटि गयो कोउ न रहा इत ऊत ॥
जो भीखा जाने राम को तेहि झूँठ लगत मत पाँच ।
सुत कलित्र धन धाम सुख मानो सुपना को सो साँच ॥

(१८)

चलनी को पानी पड़ो बरहा[6] कभी न होइ ॥

---

(१) चींटी । (२) प्रतिष्ठा । (३) स्त्री । (४) नादान । (५) पानी । (६) नहर ।

बरहा कभी न होइ भजन बिनु धिग नर देंहीं।
झूँठ परपंच मन गह्यो तज्यो हरि परम सनेही॥
ज्यों सुपने लागी भूख अन्न बिनु तन मरि जाही।
कबहीं के उठे जाग हरख कहुँ बिसमै नाहीं॥
(भीखा) सत्य नाम जाने बिना सुख चाहे जो कोइ।
चलनी को पानी पड़ो बरहा कभी न होइ॥

साखी

॥ भेष रहनी ॥

काया कुंड बनाइ कै घूमि घोटना[1] देइ।
बिजया[2] जीव मिलाइ कै निर्मल घोंटा[3] लेइ॥ १॥
साफी[4] सहज सुभाव को छानो सुरति लगाय।
नाम पियाला छकि रहै अमल उतरि नहिं जाय॥ २॥
जोग जुक्ति सुमिरन बनो हर दम मनिया[5] नाम।
करम खंडि कंठी गुह्यो गर बाँधो प्रानायाम॥ ३॥
अगम ज्ञान गूदर लियो ढाँको सकल सरीर।
ब्रह्म जनेऊ मेखला पहिरहिं मस्त फकीर॥ ४॥
सेल्ही संसय नासि कै डारो हृदय लगाय।
तिलक उनमुनी ध्यान धरि निज सरूप दरसाय॥ ५॥
ताखी तत्त जो माल[7] है राखो सीस चढ़ाय।
चरन कमल निरखत रहो मौजै मौज समाय॥ ६॥
तूमा[8] तन मन रूप है चेतनि आब[9] भराय।
पीवत कोई संत जन अमृत आपु छिपाय॥ ७॥
कुबरी[10] पानी[11] अंग भो पवन दंड बरजोर।
लागी डोरी प्रेम की तम मेटो भयो भोर॥ ८॥

---

(१) घुमाय के घोटै। (२) भाँग। (३) घूँट। (४) छन्ना। (५) माला का दाना। (६) साधुओं की टोपी। (७) माला। (८) तुम्बा। (९) पानी। (१०) छड़ी, बैरागिन। (११) पानि = हाथ।

पौवा[१] अधर अधार को चलत सो पाँव पिराय ।
जो जावे सो गुरु कृपा कोउ कोउ सीस गँवाय ॥ ६ ॥
मुरछल मन उनमान का छाया ज्ञान अकार ।
उष्न[२] ताप निस दिन सहै केवल नाम अधार ॥१०॥
अर्ध उर्ध के बीच में कमरबस्त[३] ठहराय ।
इँगला पिंगला एक है सुखमन के घर जाय ॥११॥
झोरी मौज अनयास[४] की बटुआ आनँद[५] लेय ।
मृगछाला त्रिकुटी भई बैठि सब्द चित देय ॥१२॥
सकल संत के रेनु[५] लै गोला गोल बनाय ।
प्रेम प्रीति घसि ताहि को अंग बिभूति लगाय ॥१३॥
भिच्छा अनुभव अन्न ले आतम भोग बिचार ।
रहै सो रहनि अकासवत बरजित जानि अहार ॥१४॥
जटा बढ़ावे भाव की जब हरि कृपा अमान ।
मुद्रा नावे नाम की गुरु सब्द सुनावे कान ॥१५॥
आड़बंद[६] हर हाल की अलफी[७] रहनि अडोल ।
बाघम्बर[८] है सुन्न का अविगत करत कलोल ॥१६॥
पाँच पचीस धुइँ लगी धीरज कुंड भराय ।
ज्ञान अगिन ता में दियो बिषय इन्हन[९] जरि जाय ॥१७॥
फाहुलि[१०] अगम अचिंत की चीपी[११] ध्यान लगाय ।
नूर जहूर झलकत रहै ता में मन अरुझाय ॥१८॥
भेख अलेख अपार है कहत न ज्ञान समाय ।
सुन्न निरंतर अलख है खोज करै कोउ जाय ॥१९॥
साहब सब घट रमि रहो पूरन आपे आप ।
भीखा जो नहिं जान ही सहै करम संताप ॥२०॥

(१) खड़ाऊँ । (२) गरमी । (३) कमरबन्द । (४) आसा से रहित । (५) धूल । (६) लँगोट । (७) बिना बँहोली का कुरता । (८) शेर के चमड़े का वस्त्र । (९) इंधन । (१०) फरुही । (११) नाप का कटोरा ।

॥ ब्राह्मन या ब्रह्म ज्ञानी रहनी ॥

ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत ब्रह्म मई को ज्ञान ।
ब्रह्म गायत्री जाप करि ब्रह्म रूप पहिचान ॥२१॥
ब्रह्म जनेऊ मेखला ब्रह्म कमंडल दंड ।
ब्रह्म भोग भिच्छा लिये ब्रह्मै आसन मंड ॥२२॥
ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत है ता का बड़ भाग ।
नाहिंत[1] पसु अज्ञानता गर डारे तिन ताग[2] ॥ २३ ॥
संत चरन में लगि रहे सो जन पावे भेव ।
भीखा गुरु परताप तें काढ़ेव कपट जनेव ॥२४॥

॥ सन्त महिमा ॥

संत चरन में जाइ कै सीस चढ़ायो रेनु[3] ।
भीखा रेनु के लागते गगन बजायो बेनु ॥२५॥
बेनु बजायो मगन ह्वै छुटी खलक की आस ।
भीखा गुरु परताप तें लियो चरन में बास ॥२६॥

॥ मिश्रित ॥

जोग जुक्ति अभ्यास करि सोहं सब्द समाय ।
भीखा गुरु परताप तें निज आतम दरसाय ॥२७॥
नाम पढ़ै जो भाव सों ता पर होहिं दयाल ।
भीखा के किरपा कियो नाम सुदृष्टि गुलाल ॥२८॥
जाप जपै जो प्रीति सों बहु बिधि रुचि उपजाय ।
साँझ समय औ प्रात लगु तत्त पदारथ पाय ॥२९॥
राम को नाम अनन्त है अंत न पावे कोय ।
भीखा जस लघु बुद्धि है नाम तवन सुख होय ॥३०॥
एक संप्रदा सब्द घट एक द्वार सुख संच ।
इक आतम सब भेष मों दूजो जग परपंच ॥३१॥

---

(१) नहीं तो । (२) तीन तागा अर्थात् जनेऊ । (३) धूल ।

भीखा भयो दिगम्बर[1] तजि कै जक्त बलाय।
कस्त[2] करो निज रूप को जहँ को तहाँ समाय ॥३२॥
भीखा केवल एक है किरतिम भयो अनन्त।
एकै आतम सकल घट यह गति जानहिं संत ॥३३॥
एकै धागा नाम का सब घट मनिया माल।
फेरत कोई संत जन सतगुरु नाम गुलाल ॥ ३४ ॥
आरति हरि गुरु चरन की कोइ जाने संत सुजान।
भीखा मन बच करमना ताहि मिलै भगवान ॥३५॥
आरति बिनवै ब्रह्म को केवल नाम निहोर।
बारम्बार प्रनाम करु गुरु गोबिंद की ओर ॥३६॥

---

(१) साधू जो नंगे रहते हैं। (२) क़स्द = इरादा।

॥ समाप्त ॥